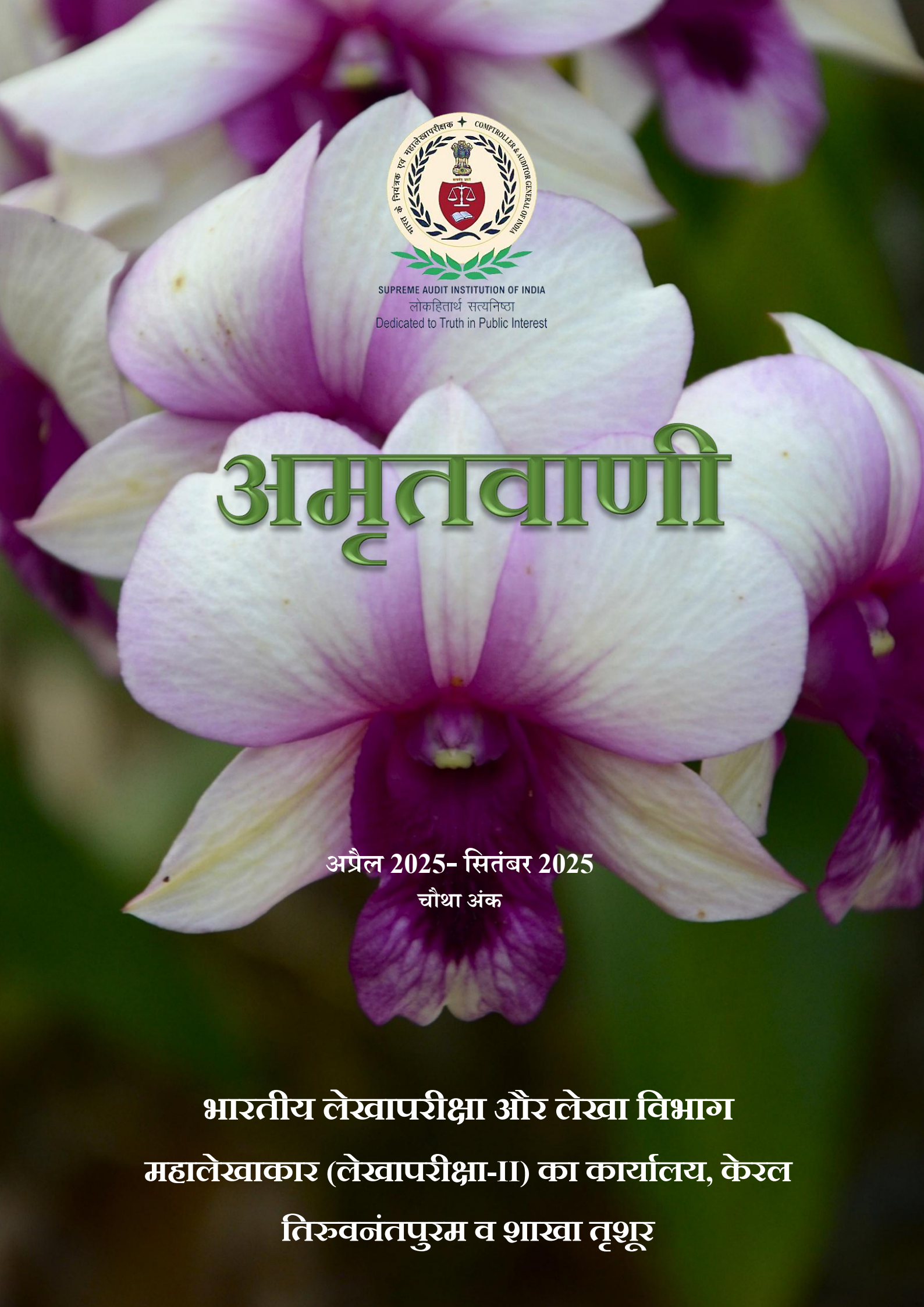

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अमृतवाणी

अप्रैल 2025- सितंबर 2025

चौथा अंक

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल

तिरुवनंतपुरम व शाखा तृशूर

अमृतवाणी

अर्ध वार्षिक पत्रिका

चौथा अंक

अप्रैल 2025- सितंबर 2025

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल

प्रकाशन:	अमृतवाणी- हिंदी ई- गृह पत्रिका
प्रकाशक:	महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम एवं शाखा कार्यालय, तृशूर
अंक:	चौथा अंक
मूल्य:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

संरक्षक

श्री विष्णुकांत पी बी
महालेखाकार

मुख्य संपादक

डॉ अनीष डी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं एएमजी I)

संपादक मण्डल

संपादक

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सदस्य

श्री कण्णन एस एस
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार के के
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री वी एस जयचंद्रन
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री योगेन्द्र सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती नीनू एम डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रीमती राधिका टीवी.
वरिष्ठ अनुवादक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

विष्णुकांत पी बी, आई ए ए एस

हमारी कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के नवीनतम संस्करण के प्रकाशन पर मुझे असीम आनंद का अनुभव हो रहा है । राजभाषा को समृद्ध एवं सक्षम बनाने में और पदाधिकारियों में हिंदी भाषा में कार्य करने के प्रति गौरव का भाव जगाने में 'अमृतवाणी' का योगदान प्रशंसनीय रहा है।

राजभाषा विभाग 1975 से शुरू हुई अपनी यात्रा के 50वें वर्ष तक पहुंच चुका है और इस वर्ष स्वर्ण जयंती मना रहा है । राजभाषा कार्यान्वयन को अपना दायित्व मानकर पूर्ण प्रतिबद्धता से कार्य करने वाले सभी पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई । उम्मीद करता हूं कि आपका सहयोग भविष्य में भी बना रहेगा और हमारी पत्रिका प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देने वाले रचनाकारों, संपादक मण्डल एवं अन्य सदस्यों को हार्दिक बधाई।

महालेखाकार
संरक्षक,'अमृतवाणी'

पी के लालू, आई ए ए एस

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के चौथे अंक के प्रकाशन पर सबको बधाई । साथ ही राजभाषा विभाग की 50वीं वर्षगांठ पर शुभ कामनाएं । कार्यालयीन कामकाज के बीच कलात्मक अभिव्यक्तियों के लिए एक मंच प्रदान करना वास्तव में प्रशंसनीय है । इससे पदाधिकारियों की सृजनात्मकता को भी प्रोत्साहन मिलता है, हिंदी में अपने विचारों को ढालने का मौका मिलता है और राजभाषा हिंदी भी अभिवृद्ध हो जाती है । पत्रिका के नवीनतम अंक की सफलता के लिए मंगलकामनाएं देते हुए मैं इसके प्रकाशन से जुडे संपादक मण्डल, विशेषकर रचनाकारों का हृदय से अभिनंदन करता हूं जिनके योगदान के बिना पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं होता ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार / लेप.प्र.स.III
शाखा कार्यालय, तृशूर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

डॉ अनीष डी, आई ए ए एस

हिंदी, भारत की एक प्रमुख भाषा होने के साथ-साथ, भारतीय संस्कृति और सभ्यता का अभिन्न अंग है। जिस तरह भारत की संस्कृति और सभ्यता का वैश्विक स्तर पर आदर किया जाता है उसी तरह हिंदी ने भी आज समूचे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बना ली है। अपनी सरलता और सुंदरता से सभी भारतीयों को एक साथ जोडने में इस भाषा का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

हिंदी की स्वीकार्यता को बढाने में विभागीय पत्रिकाओं की भूमिका अहम रही है। हमारी नवीनतम प्रस्तुति - अमृतवाणी के चौथे अंक को हमने मनोरंजनात्मक और सूचनात्मक दृष्टि से समृद्ध बनाने का हर संभव प्रयत्न किया है । पदाधिकारियों के रचनात्मक अभिव्यक्तियों के साथ - साथ राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियों को भी समाहित करने का प्रयास किया गया है। इस वर्ष का एक अन्य महत्व यह है कि राजभाषा विभाग ने अपनी यात्रा के 50$^{वें}$ वर्ष में प्रवेश किया है। राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान आयोजित सम्मेलनों एवं अन्य कार्यक्रमों की झलकियां भी इस पत्रिका में समाविष्ट की गयी है। उम्मीद है कि जिस उत्साह एवं उमंग से हमने इस पत्रिका को संवारने की कोशिश की है, उसी प्रकार उसको सराहा जाएगा।

पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल और रचनाकारों के अर्पण मनोभाव और अथक प्रयासों का अभिनंदन करता हूँ और पत्रिका की सफलता के लिए मंगलकामनाएं देता हूँ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन व लेप.प्र.स.I
मुख्य संपादक 'अमृतवाणी'

इस अंक में

साहित्यिक

ज़िन्दगी - श्री अनुराग शुक्ला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.09**

मेरी सहेली - सुश्री उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.11**

शहर की खामोशियाँ – श्री ओम प्रकाश मीना, स.लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.12**

ऑडिट – श्री के एम कृष्णन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.13**

घर की सरहदें – श्री विकास खोबड़ा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.14**

मैंने हमेशा कोशिश की है - सुश्री ए एन देविका — **पृ सं.15**

मंज़िल भी है, रास्ता भी है, सोचता क्या है, अरे मुमकिन भी है - सुश्री रुचिका, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.16**

जुबान पे ताला - श्री राकेश गोदारा, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.17**

मेरा बुलेट - सुश्री शेबा पी एच, उप महालेखाकार — **पृ सं.18**

आशीर्वाद - सुश्री उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.20**

छाँव में बसी कहानियाँ - सुश्री निशा जी पिल्लई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.21**

मौन की भीड़ और बोलती चुप्पी - श्री राकेश गोदारा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.23**

छोटे कदमों की राह: एक बदलाव की कहानी - श्री रविंद्र कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.24**

बक्सा - श्री पुष्पेंद्र पँवार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.27**

छोटे - छोटे प्रयास, बड़े - बड़े सपने – श्री ओम प्रकाश मीना, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी — **पृ सं.29**

इस अंक में

कार्यालयीन

युद्ध की अंतर्धाराएं: दर्शन, मनोविज्ञान और भारत-पाक संघर्ष: **पृ सं.31**
श्री गोपेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

"बच्चों और युवाओं में मोबाइल फोन की लत:एक बढ़ता संकट" **पृ सं.35**
सुश्री जे आर मालविका

जब पानी बढ़ता है: बाढ़ किस तरह ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को बदल रही है - अतुल कृष्ण डी **पृ सं.40**

भव्य विवाह समारोह: प्रेम और वैभव का अद्भुत संगम **पृ सं.42**
सुश्री जे आर मैथिली

स्वतंत्रता दिवस समारोह **पृ सं.48**

दुनिया की 5 सबसे पुरानी जीवित भाषाएँ - **पृ सं.51**
श्री योगेंदर सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

राजभाषा विभाग की 50वीं वर्षगांठ **पृ सं.55**
भारतीय भाषा अनुभाग
स्वर्ण जयंती समारोह
दक्षिण संवाद

लेखापरीक्षा रिपोर्ट **पृ सं.62**

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

ज़िन्दगी

श्री अनुराग शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जिन्दगी ढलती उम्र के साथ,
कुछ अजब ही मंजर दिखाती है !!
कभी कुछ सिखाती है, कभी कुछ बताती है।
वाह रे ऐ जिन्दगी तू भी क्या आजमाती है।

बचपन की वो मीठी यादें हों या दोस्तों
के साथ बीते हर पल का रोमांच,
तू सारा आईना साफ-साफ दिखाती है,
वाह रे ऐ जिन्दगी तू भी क्या आजमाती है।

उम्र का हर पड़ाव यह सोचकर काटता गया मैं,
कि आने वाला पल मेरा ही होगा,
बैठा ताकता था मैं बस इस फ़िराक में कि
कभी तो मेरी जिन्दगी में भी सवेरा होगा !!
मुठ्ठी में रेत सी तू फिसलती चली गई,
और मैं देखता ही रह गया।
कहती कुछ भी नहीं, फिर भी सिखाती है,
वाह रे ऐ जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।

दोष देने का तुझको, न इरादा है मेरा,
रश्क तो खुद से है, यह सफर खुल के न जी पाने का।
बस यहीं सोच सोच कर कसमसाता हूँ। शिकवा
तुझसे कुछ भी नहीं,
तू तो साथ हर पल निभाती है, चुप-चाप चलती
जाती है,
वाह रे ऐ जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।

जवानी के जोश में पता ही न चला,
किस रफ्तार से निकल गई तू,
ढलती उम्र में पता चला कैसे हाथों से फिसल गई
तू ?!!

कभी थी ऊंची उडान, कभी हिचकोले और
कभी थोड़ा सा डगमगाती है
वाह रे ऐ जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।
जब भी देखूं सामने, कि समस्या बड़ी है।
त्राहिमाम करता मैं, ऐ जिन्दगी क्यों पीछे पड़ी है
??!!

मगर तू है कि फिर भी मुस्कुराती है, जीवन का
कोई पाठ पढ़ाती है,
मुश्किलों से निकलना भी तो तु ही सिखाती है
गज़ब है तेरी माया ऐ ज़िन्दगी तू भी क्या
आजमाती है।

अजब तेरी रीत है, कभी दिखाए पतझड़
तो कभी फूलों की प्रीत है।
कभी सरपट निकलती तो कभी थम सी पड़ी है,
चुपचाप हरदम साथ तू खड़ी है।
निरंतर तू मुझको बहुत कुछ सिखाती है,

वाह रे ऐ जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।

अब समझ आया तू तो जीने का नाम है।
सोचना कम और कर गुजरना कोई बड़ा काम है।

छोटी-छोटी खुशियों का भी जश्न मनाना है,
और करना दुखों-मुसीबतों को सलाम है।
नई उम्मीद, नई उमंग, नई राह तू दिखाती है
वाह रे ऐ जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।

तुझको जी भर के जीने के, कई नुस्खे
आजमाता हूँ मैं। कुछ बातें नई, कुछ
अनकही, कहता जाता हूँ मै। कभी
कुछ सुनती और कभी कुछ बताती है,
वाह रे जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।

जिन्दगी आगे बढ़ने का नाम है, कभी
खुशियों की सुबह तो मुश्किलों की ढलती शाम हैं।
रात कितनी भी लम्बी क्यों न हो,
सुबह की किरन जरूर दिखाती है
वाह रे जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।

तुझको समझने में उलझने का न इरादा है मेरा,
कृपा है परमेश्वर की जिसकी रहमत से मिल गई
है तू,
हौसला बस इतना मिले, कि कुछ ढंग का कर
जाऊँ।

कब थमेगा यह सफर ज्ञान नहीं है मुझको,
शुक्रिया तहे दिल से तेरा जो मिली है मुझको,
हर बीता लम्हा और पल कुछ न कुछ बताता है,
सजदा है तुझको मेरी प्यारी ज़िन्दगी
तू भी क्या खूब सिखाती है।
वाह रे जिन्दगी तू भी क्या खूब आजमाती है।

मेरी सहेली

सुश्री उषा बेर्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

इम्तिहान की घनी धूप में
जब मुरझाने वाली थी मैं
साया बनकर आई जो तुम
मेरी बेचैनियां हो गए गुम।

चुनौतियों की भूल भुलैया में
जब मैं खो जाने वाली थी
रोशनी बनकर तुम जो आई
मेरी उलझनों को सुलझाई।

असफलता की गहराई में
जब गिर जाने वाली थी मैं
हौसला बढ़ाकर तूने मेरी
हर घबराहट से कर दी दूरी।

साथ हो अगर तेरे जैसी यार
जीवन-नदी हो जाएगी पार
पूरे होंगे दिल के अरमान
होंठों पे सदा रहेगी मुस्कान।।

शहर की खामोशियाँ

श्री ओम प्रकाश मीना
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

इन मशीनों ने पूरा शहर नचा रखा है,
इन्सानों ने भी मौन लगा रखा है।
कितनी हँसती खेलती सी दुनिया है सबकी,
सबने सबको पागल बना रखा है।

सुबह होती है, उठ जाते हैं लोग, हँसते हैं,
गुनगुनाते हैं, ठहाके लगाते हैं।
ये दुनिया है एक बड़ा सा रंगमंच,
हर शख्स को इसने जोकर बना रखा है।

किसी को राम नाम से प्रेम है,
किसी ने खुदा को अज़ीज़ समझा है।
इन नामों की तकरार में लोगों ने,
इंसानियत का मज़ाक बना रखा है।

सुलगती फिरती है हर लाश सड़क पर, एक चिंगारी की बटोही,
मत बहस कर इनसे, लोगो ने जज़्बातों को तर्क बना रखा है।

श्री के एम कृष्णन
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सूटकेस है साथी इनका, कंधे पर भारी बोझ,
शहर-शहर ये घूमते, ना कोई आराम, ना कोई ओझ।

सुबह निकल पड़ते घर से, अनजाने रास्तों पर,
नया दफ़्तर, नए लोग, हर दिन एक नया रण।

फ़ाइलों का अंबार है, हिसाब-किताब का जाल,
आँकड़ों में ही उलझे रहते, कटता इनका हर पल।

कभी दूर पहाड़ों पर, कभी रेगिस्तान की धूप,
हर जगह पहुँचते ये, बनकर ऑडिट का रूप।

घर की याद सताती है, त्यौहार भी जाते छूट,
परिवार से दूर रहकर, ये निभाते अपनी ड्यूटी।

थकान भरी आँखें हैं, पर काम कभी ना रुके,
एक ऑडिट खत्म हुआ नहीं, दूजा इंतज़ार करे।

रेलगाड़ी की खिड़की से, गुज़रते खेत-खलिहान,
अगले स्टेशन पर फिर, नया दफ़्तर, नया इम्तिहान।

ये घुमंतू जीवन इनका, ना कोई शिकायत, ना कोई आह,
देश की अर्थव्यवस्था की, ये रखते हैं खुली निगाह।

श्री विकास खोबड़ा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

घर की सरहदें

कभी तो कोसते होंगे सफर को,
जब भी याद करते होंगे घर को।

निकल जाती हैं औलादें कमाने,
परिंदे खोल ही लेते हैं पर को।
सब दुआएँ कबूल हो गई थीं,
माँ ने जब चूमा था सर को।

महीने बीत जाते हैं लौटते-लौटते,
हमने सरहद बना लिया है दर को।
शायद कोई संदेश आया होगा,
रोज चला जाता हूँ डाकघर को।

मेरे शहर की बातें हो रही हैं,
मुझे थोड़ा और सुनने दो ख़बर को।
घर से बाहर सब नंगा दिखता है,
मैं किस-किस से बचाऊँ नज़र को ?

मैं अलग हूँ, मेरा किरदार अलग है,
सच मत समझो मेरे हुनर को।

मैंने हमेशा कोशिश की है

सुश्री ए एन देविका
सुपुत्री श्री जी सी नारायणन पोट्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैंने कभी पंख नहीं पहने,
ना चलना सीखा बिना डगमगाए,
जहाँ लोग मुस्कान में जीत लेते हैं,
मैंने हर चीज़ साँस-साँस कमाई।

वो करते हैं बातें जैसे बूँदें गिरें
हल्की, बेपरवाह, सहज सी
और मैं,
हर शब्द सोचती हूँ,
हर ख़ुशी माँगती हूँ ख़ामोशी से।

कभी-कभी थक जाती हूँ
इस 'काफ़ी नहीं' की गूँज से,
इतनी कोशिशों के बाद भी
जो बचता है, वो बस मैं होती हूँ,
थोड़ी हारी, थोड़ी ज़िंदा।

मन करता है बस
कोई समझे... बिना कहे,
बैठे पास, और कहे
"तू जैसी है, ठीक है"

मंज़िल भी है, रास्ता भी है
सोचता क्या है, अरे मुमकिन भी है ।

सुश्री रुचिका
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

इस राह को, राह तेरी है,
दूसरों की परवाह क्यों पड़ी है ?
मंज़िलें तो मुन्तज़िर तेरी हैं,
तुझसे ज़्यादा उन्हें ज़रूरत तेरी है ।
सोचता क्या है, मुमकिन ही तो है ।
ज़मीन है तो पाँव ले,
दरिया है तो नाव ले,
हवा है तो उड़ान ले,
यही बस मन में ठान ले -
कि मुमकिन ही है ।
कर तू हौसले बुलंद, और दिल में भर कुछ उमंग ।
मुश्किलें हैं तो हँस दे ना,
मन ही तो है, भुला दे ना ।
काँटे हैं तो चल तू फूल समझकर,
आग है तो राख समझकर ।
फूल है तो कर उसका शुक्रिया अदा,
ज़िंदगी थोड़ी ही है - ना कर गिले ज़्यादा ।
ये सब यहीं है, यहीं रह जाएगा,
मुसाफ़िर है तू - चला जाएगा,
यही मुमकिन है ।

जुबान पे ताला

श्री राकेश गोदारा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बारिश में भीग कर जो निखरा था कभी,
धूप में काला हो गया है
बड़ी मशक्कत से मिलता है वो आजकल,
गरीब के मुँह का निवाला हो गया है
हमारे इशारे सहमे हुए हैं,
लब बेबस है हिल नहीं सकते,
तुम क्यों चुप हो गये,
तुम्हारी जुबान पे क्यों ताला हो गया है।

हैरानी होगी तुम्हें बहुत,
हरगिज ऐतबार ना आएगा इस बात पर
जिसके छू लेने से गुदगुदी होती थी,
वो राणा प्रताप का भाला हो गया है
अजीब हालात में आके ठहरी है जिंदगी, बतायें तो क्या
जिसके साथ होने से सफर आसान होता था,
वही मेरे पाँव का छाला हो गया है।

मेरा बुलेट

सुश्री शेबा पी एच,
उप महालेखाकार

मैं तब छोटी थी, दो साल की थी जब मुझे एक खिलौना मिला था। मैं इतनी खुश हुई कि जोर से ताली मारकर छलांग मारी। वह बैटरी पर चलने वाली छोटी सी बाइक थी। लाल रंग की और देखने में बहुत ही सुंदर। मैं खुशी से फूली नहीं समा रही थी, खुशी से मेरी आंखें ही भर आयी थी। उस दिन पूरा मैं उसमें बैठके इधर-उधर, दाए – बाए कट मारके चलायी। उस रात को मुझे नींद तक नहीं आ रही थी। मेरी मां ने लल्ला लल्ला लॉरी गाके सुलाने की बहुत कोशिश की, लेकिन मुझे उस बाइक को गले लगाके सोना था। दूसरा दिन उठी तो बहुत थकी हुई थी लेकिन बाइक की याद आते ही मुझमें जोश भर गया। फ्रेश होकर फिर से बाइक चलाने में लग गयी थी। बाद में सडकों पर ब्रूम ब्रूम की आवाज से इधर उधर उछाल मारने वाली बाईकों को देखते हुए मुझे अपनी बाइक बहुत ही छोटी लगने लगी। मैं बहुत ही उदास और निराश होने लगी। एक दिन घर के सामने खडी की हुई बाईक को देख कर मैं उस पर बैठने की जिद्ध करने लगी। मेरी मां ने बहुत मनाने की कोशिश की कि यह बाईक हमारी नहीं है। मैं जमीन पर पडी हाथ-पैर मार कर रोने लगी। तंग आकर मेरी मां ने उनमें से सबसे बडी एक बाइक पर बिठाकर समझाया कि तू बडी होकर अपने कमाए हुए पैसे से बाइक खरीद लेना, दूसरों की बाइक देख कर बैठने की इच्छा मत रखना। यह बात सुनकर मेरे नन्हे मन को बहुत दुख हुआ .... उस छोटी उम्र में ऐसी बातें सुनना मुझे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा।

मेरे पापा ने 1980 में बजाज चेतक स्कूटर खरीदा जो बहुत ही स्टाइलिश और प्रीमियम दिखने वाला था। मेरे पापा उस स्कूटर के गुणगान करते थे... अच्छी पिक अप है, ओटॉ स्टार्ट है और हैंड ब्रेक लोक है ...। और बहुत ही घमण्ड और गर्व से बोलते थे कि 70 किलो मीटर एक घण्टे का स्पीड है। उसकी तारीफ सुन-सुनकर मैं भी उस पर फिदा हो गयी थी। उसकी मजबूत मेटल पर बिठाकर सब कहीं घुमाया करते थे। मेरी सबसे पसंदीदा चीजों में ये स्कूटर अव्वल था। पापा

बार-बार उसकी पेंटिंग - पॉलिश करवाके एक दम ताजा रखते थे, सफाई भी खुद ही करते थे। स्कूल, कॉलेज की मेरी पढाई, स्पोर्ट्स और नौकरी मिलने तक यह स्कूटर मेरे पास था। अपने भाई को भी नहीं देती थी। एक बार मुझसे पूछे बगैर लेके गया और मैं उसे कान भर सुनायी थी।

तब तक मैं कमाने लगी थी और अपना एक बाईक लेने की इच्छा बढने लगी। पहले से मैं इसके लिए पैसे बचाने लगी थी और तय किया था मेरी सबसे महत्वपूर्ण खरीद यही होगी। सबसे अच्छा ब्रांड खोजने भी लगी थी। आखिरकार मुझे वह मिल गया.... हरले डेविसन एक दमदार रोडस्टेर बाइक है।

लंबे ड्राइव के लिए सबसे अच्छा और मजबूत। उसके बाद जैसे कि मेरे पंख ही निकल आए थे ..... जिधर भी जाना चाहो तुरंत उस पर बैठकर उडने लगती।

अब मुझे ऐसा लगता है कि मैं हवा में उड रही हूँ ..... मैं अधिक मुक्त और स्वतंत्र अनुभव करने लगी। मां-बाप की डांट पडते ही बाईक पर सवार होकर मैं फरार हो जाती थी ... किसी का कहा नहीं सुनती थी। मेरी दोस्त मेरी बाईक ही थी। कोई उसकी जगह नहीं ले सकता था। मेरा बाईक कभी पंक्चर नहीं हुई .... ना ही मुझे कभी परेशान किया है या धोखा दिया है जैसे मेरे दोस्त करते हैं। जब मैं उसको कट मारके दाए-बाए चलाती हूँ तो कभी मुझसे गुस्सा नहीं करती जैसे मैं दोस्तो से नहीं मिलती तब दोस्त किया करते हैं। कहीं भी जाना हो मेरी बाईक मेरी हर इच्छा को, मेरी हर अभिलाषा को पूरा करने में मेरी मदद करती है । जब उस पर बैठकर उसे स्टार्ट करती हूँ तो लगता है दुनिया में कोई भी मेरी बराबरी नहीं कर सकता।

आशीर्वाद

सुश्री उषा बर्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

उस दिन सरिता का जन्मदिन था। सरिता बहुत उत्साहित थी और मन ही मन प्रार्थना कर रही थी, "हे प्रभु, आज मुझे आशीर्वाद बना दो।" उसने अपनी स्कूल की दोस्त से वादा किया था कि वह उसे दोपहर के भोजन के लिए बाहर ले जाएगी।

बैंगलूरू में यह उसका पहला जन्मदिन था। केरल में, वह अपने दादा-दादी के घर पर अपने चचेरे भाइयों के साथ अपना जन्मदिन मनाती थी। उसे उनकी बहुत याद आती थी। वह बस में चढ़ी और खिड़की के पास बैठकर सड़क के दृश्य देख रही थी। तभी लगभग 17 साल की एक लड़की बस में चढ़ी और उसके बगल में बैठ गई। वह फोन पर मलयालम में बात कर रही थी। बातचीत से पता चला कि वह एक छात्रा है और छात्रावास में रह रही है।

वह धीमी आवाज़ में नहीं बोल रही थी, इसलिए सरिता आसानी से उसकी सारी बातें सुन सकती थी। वह लड़की अपनी माँ को अपनी आर्थिक तंगी के बारे में बता रही थी। उसने अपने खर्चों के लिए अपने खाते में बची हुई राशि निकाल ली थी। कुछ पैसे खर्च करने के बाद, उसने बाकी 500 रुपये अपने तकिये के कवर में छिपा दिए, लेकिन अगले दिन उसे पता चला कि वे चोरी हो गए हैं। वह बहुत चिंतित लग रही थी।

सरिता ने अपना पर्स खोला और 500 रुपये का नोट निकाला। वह उसकी मदद करना चाहती थी। लेकिन उसे डर था कि दूसरी लड़की की क्या प्रतिक्रिया होगी। वह उससे बातचीत शुरू करना चाहती थी, लेकिन लड़की फोन पर बात करने में व्यस्त थी और बस से उतरने की तैयारी कर रही थी।

सरिता ने चुपचाप 500 रुपये का नोट उसके हाथों में रख दिया और हिम्मत जुटाकर उससे बोली, "मैं तुम्हारी बातें सुन रही थी। कृपया मेरी थोड़ी सी मदद स्वीकार करें।" वह पहले पैसे लेने में झिझकी, लेकिन सरिता ने कहा, "कोई बात नहीं। कृपया स्वीकार करें।" लड़की बस स्टॉप पर उतरी और खुशी से भरे दिल से सरिता की ओर हाथ हिलाया। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे। सरिता भी खुश थी कि वह किसी ज़रूरतमंद की मदद कर सकी। यहीं सचमुच आशीर्वाद है।

छाँव में बसी कहानियाँ

सुश्री निशा जी पिल्लई
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

स्टूडियो घिबली की फिल्म, 'माई नेबर टोटोरो' में एक बेहद भावुक पल है, जब पिता अपनी बेटियों से कहते हैं कि उन्होंने गाँव का वह घर सिर्फ इसलिए चुना क्योंकि उस घर के परिसर में एक बहुत बड़ा कपूर का पेड़ था। यह सोच मुझे बहुत ही काव्यात्मक लगी। सोचिए, एक पेड़ के लिए घर खरीदना ! जब फिल्म में वह पेड़ सामने आता है, तब साँसे थम गई थी। बादलों को छूता हुआ, अनगिनत, अदृश्य और अनजान जीवों को अपनी शरण में छाँव देता हुआ पेड़। वह सिर्फ परिदृश्य का हिस्सा नहीं था - वह खुद एक जिंदा आशियाना था।

मैंने अपना घर या दफ्तर पेड़ों के लिए नहीं चुना, पर अब लगता है जैसे उनकी मौन उपस्थिति ही इन स्थानों को मेरे लिए और भी अपना, और भी प्रिय बना देती है। मुझे यह सौभाग्य प्राप्त है कि मैं एक ऐसे राज्य की निवासी हूँ जहाँ हरियाली केवल एक दृश्य नहीं बल्कि जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है। खुशी की बात यह भी है कि यहीं हरियाली मेरे कार्यस्थल तक भी फैली हुई है। पेड़ों से एक नर्म सी बेआवाज सी दोस्ती है मेरी। इसीलिए विशाल प्रकृति के इन दिग्गजों की छाँव में काम करना, मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं। हर दिन उनके साये में चलना, उनके प्राचीन तनों को हल्के से छूना और हवा के साथ उनकी हल्की-फुल्की बातों को सुनना – ये सब मेरे लिए अनमोल अनुभव है।

हमारा कार्यालय, विभिन्न प्रकार के वृक्षों से सुसज्जित है - भव्य पुराने बरगद और फैले हुए रबर के पेड़ से लेकर छोटे आम्रपल्ली (मेंगोस्टीन) तक। यहाँ महागणी, लाल चंदन, प्राइड ऑफ बर्मा, आम, अमरूद, भारतीय कॉफी प्लम, अमलतास (गोल्डनशॉवर टी), नारियल और अन्य ताड़ के पेड़

तथा कतारों में लगे बादाम के पेड़ है। यद्यपि मैंने अब तक इन सभी के नाम नहीं सीखे है, और ना ही सभी से अपनापन बना पाई हूँ, फिर भी मैं रोज़ उनकी उपस्थिति को महसूस करती हूँ और उनकी नीरव शक्ति व स्थिरता पर हैरान रह जाती हूँ।

इन में कुछ पेड़ ऐसे भी हैं जो कुछ खास लगते हैं। खास इसलिए भी क्योंकि उनके साथ कुछ अनुभव जुड़े हैं या कुछ एहसास। मेरे यहाँ के पहले वर्ष में, ऑडिट भवन के प्रवेश द्वार पर खडा पुराना भव्य बरगद का पेड़, वह पहला ऐसा वृक्ष था जिससे मेरा औपचारिक परिचय हुआ। एक दिन दोपहर में, ऊपर से एक सूखी, भंगर टहनी मेरे पैरों से बस कुछ इंच दूर आकर गिरी – बस एक साँस जितना फासला छोड़कर। पास खड़े एक वरिष्ठ अधिकारी ने धीरे से कहा, "भगवान ने तुम्हें बचा लिया।" कभी-कभी सोचती हूँ - क्या वह टहनी एक चेतावनी थी - जीवन में, काम में, विचारों में सावधानी बरतने के लिए; या शायद वह एक स्वागत था – अपने मौन विश्वास-वृत्त में प्रवेश देते हुए; या बस एक संयोग ? आज भी, मैं जब भी उसके पास से गुज़रती हूँ, मैं ऊपर देखती हूँ – डर से नहीं, श्रद्धा से। क्योंकि एक बार उसने मुझसे कुछ कहने की कोशिश की थी।

बरगद के ठीक सामने, एक विशाल रबर का पेड़ है, शाखाएँ चारों दिशाओं में फैलाए हुए, प्रवेश द्वार को वर्षावन का किनारे जैसा बनाते हुए - लगभग एक अमेज़न जैसा। हालांकि हाल ही में इसकी कुछ शाखाएं काटकर व्यवस्थित कर दी गई है लेकिन फिर भी इसकी गरिमा बनी हुई है। जब भी मैं इसके पास से गुज़रती हूँ मुझे इसका जुड़वा या शायद इसका प्रतिबिंब - याद आता है। मेरे अपार्टमेंट के भीतर, मेरी मंजिल के गलियारे में इसी पेड़ का एक छोटा रूप खड़ा है, परिस्थितियों से बना हुआ, सजावटी और सीमित।

वह खिड़की के पास एक गमले में बैठा है, जितनी रोशनी मिल सकती है, उसे पीते हुए। न उसके ऊपर आकाश है, न उसके चारों ओर हवा और न ही उस वन का ज्ञान जहाँ से वह आया है। मुझे उसके लिए एक हल्की-सी कसक महसूस होती है क्योंकि मैं जानती हूँ कि यह क्या बन सकता था। क्योंकि मैंने इसके साथी को उसकी पूरी गरिमा में देखा है। कितने लोग है जो इस पौधे की तरह जीते हैं - छोटे बर्तनों में जड़े जमाए हुए, उस विशालता से अनजान जिसके लिए हम बने हुए हैं।

पेड़ों से घिरे पार्किंग स्थल का होना वाकई में एक खुशकिस्मती है। अकाऊंट्स एंड एंटाईटलमेंट बिल्डिंग के पिछले द्वार के पास, पार्किंग स्थल के किनारे चार बादाम के पेड़ कतार में - कंधे से कंधा मिलाए, जैसे पुराने साथी जिन्होंने धूप और आँधियाँ साथ-साथ देखी हो। सामने तिरछी दिशा में तीन ओर पेड़ खड़े है – थोड़े ढीले, सहज, मानो गपशप करती चचेरी बहनें हों; हवा में रहस्य फुसफुसाती, हँसी दबाती। और इनके बीच, न किसी दल में, न पूरी तरह अलग – एक अकेला पेड़ बादाम का। नज़दीक इतना कि हँसी सुन सकें, पर दूर इतना कि उसका हिस्सा न बन सके। क्या वह अलग किया गया है या उसने यह एकांत चुना है ? क्या वह शामिल होने को तरसता है, या इस चुप्पी में ही उसका घर है ? अब वह मेरे लिए "बीच वाला" है। जब भी अपनापन, दूरी या अपनी शर्तों पर जीने के सम्मान के बारे में सोचती हूँ, उसकी छवि हवा में हिलते पत्तों-सी मेरे मन में देर तक ठहरी रहती है।

कार्यालय के इन पेड़ों से जुड़ी मेरी यादें, इन पन्नों में पूरी नहीं समा सकती। यह तो बस कुछ पत्तियाँ हैं जो हवा के संग मेरे शब्दों में उतर आई हैं। बाकी वृत्तांत, बाकी ऋतुएँ किसी और दिन के लिए छोड़ देती हूँ - जब वे फिर से मुझे अपनी छाँव में बुलाएंगी और अपनी कहानियाँ सुनाएंगी।

मौन की भीड़ और बोलती चुप्पी

श्री राकेश गोदारा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रश्न खड़े करने वाले मनुष्य अधिकांश जगहों से बाहर खदेड़े जाने का इनाम पाते हैं।चाहे किसी भी जगह हो, व्यवस्था को स्वीकार कर लो, उस व्यवस्था को और मज़बूत करो, फिर तुम उन व्यवस्थाओं के नियंताओं के करीबी भी हो जाओगे।

हर जगह हर समूह का एक लीडर होता है और बाक़ी पूरी टीम उस लीडर की ज़ेरोक्स होती है, कोई ऑरिजनलिटी नहीं । वे ग्रुप समाज और सोशल मीडिया में छाए हुए हैं, एक निश्चित पैटर्न है उनका; एक मुखिया कुछ कहता है बाक़ी भीड़ उसको वायरल करने का काम करती है। एक गुरूर भी होता है उनको कि हमारा लीडर सबसे बेहतरीन आदमी है और जो हमारे समूह में है या हमसे सहमत हैं वे सबसे सही लोग हैं। ये सदियों से चल रहा है, हर साल-दो-साल में नए लीडर पैदा हो जाते हैं, धर्म, राजनीति, विचारधारा के नाम पर।

ढूँढ लो चारों तरफ़ एक भी आदमी जो ऐसे किसी न किसी समूह के शिकंजे में न फँसा हो। कहीं तो पक्का फँसा है, A नहीं तो B में और B नहीं तो C में।और इनकी अपनी दुनिया है उसी में मस्त हैं बाक़ी दुनिया से इनको कोई कुछ खास लेना-देना नहीं।

तुम किसी एक ही गैंग के पाँच लोगों से मिलो तो पाँचो एक ही तोता-पाठ करेंगे, मुझे संदेह है कि कहीं पाँच आदमी, पाँच न होकर एक ही तो नहीं है ? और वो एक भी कोई और ही हो ! मानो जैसे पाँचों में एक ही पित्तर घुस गया हो !

आठ बिलियन लोग एक भ्रम है, कुछ सैकड़ों विचारधाराएँ हर तरफ़ फैली हैं, और मौलिक आदमी हमेशा के लिए मर गया है । तुम, तुम नहीं हो, एक विचारधारा की कठपुतली हो। सोचो वरना बहिष्कृत हो जाओगे !!

छोटे कदमों की राह: एक बदलाव की कहानी

श्री रवींद्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अरुण खेत के किनारे खड़ा था। ढलते सूरज की सुनहरी किरणें लंबी घास पर बिखर रही थीं, हवा में मिट्टी, पके धान और कहीं दूर जल रही लकड़ी की हल्की-सी खुशबू तैर रही थी।

उसका बैग कंधों पर ढीला लटक रहा था - किताबों के वजन से नहीं, बल्कि अनिश्चितता के बोझ से भारी। 28 साल की उम्र में वह खुद को फंसा हुआ महसूस करता था - एक ऐसे काम में, जो हर दिन उसकी ऊर्जा सोख लेता था; एक ऐसे शहर में, जो हमेशा शोरगुल से भरा रहता था; और एक ऐसी दिनचर्या में, जो किसी मंज़िल की ओर नहीं ले जाती थी।

उसके दोस्त आगे बढ़ रहे थे - प्रमोशन, शादी, बच्चे - और वह वहीं का वहीं था। वह खुद से कहता, "कभी" वह शुरू करेगा। कभी वह अपना बिज़नेस शुरू करेगा, जो सालों से उसके मन में पल रहा था। कभी वह अपनी सेहत सुधार लेगा, ताकि दो मंज़िल चढ़ने पर सांस न फूले। कभी वह वो ज़िंदगी जिएगा, जो सच में उसकी हो।
लेकिन वह "*कभी*" कभी आया ही नहीं।

एक सप्ताहांत, अरुण अपनी दादी के गांव चला गया - एक ऐसी जगह, जहाँ समय धीमा चलता था। हवा में चमेली की महक थी, और शामें ऐसे उतरती थीं, जैसे कोई बूढ़ा कथाकार धीरे-धीरे कहानी कह रहा हो।

उस रात, बरामदे की मद्धम रोशनी में वह अपनी दादी को देख रहा था, जो एक पुराना शॉल सिल रही थीं। उनकी झुर्रियों भरी उंगलियाँ धीमी लेकिन बेहद सटीक लय में चल रही थीं। सुई कपड़े में उतरती, निकलती - जैसे दशकों से उसी ताल पर नाच रही हो। "क्या आपको इतने धीरे-धीरे करते हुए थकान नहीं होती ?" उसने पूछा। दादी ने बिना नज़र उठाए कहा, "अगर जल्दी करूँगी तो गलती करूँगी। एक-एक टांका लगाकर ही कोई चीज़ पूरी होती है।" थोड़ा रुककर उन्होंने अपनी धीमी, स्थिर आवाज़ में जोड़ा, "ज़िंदगी भी ऐसे ही बनती है। एक दिन में सब कुछ नहीं होता। रोज़ छोटे-छोटे कदम लो... फिर देखना, कितनी दूर चले जाओगे।" ये शब्द उसके दिल में ऐसे उतरे, जैसे सूखी ज़मीन में पहली बारिश।

अगली सुबह, अरुण ने एक फ़ैसला किया - इतना छोटा कि उसे खुद पर हंसी आ रही थी। वह 15 मिनट पहले उठा और उद्यमिता पर लिखी किताब के सिर्फ दो पन्ने पढ़े। सिर्फ दो पन्ने। अगले

दिन भी यही किया। एक हफ्ते बाद, दो पन्ने पाँच हो गए। एक महीने में, उसने पूरी किताब खत्म कर दी - सालों में पहली बार। कोई आतिशबाज़ी नहीं हुई, कोई चमत्कार नहीं, लेकिन उसके भीतर कुछ बदल गया। वह हल्का महसूस कर रहा था - जैसे लंबे गोते के बाद पहली सांस, छोटी लेकिन राहत भरी।

छह महीने बाद, ऑफिस में अफवाहें फैलने लगीं - छंटनी आने वाली थी। कॉरिडोर में धीमी फुसफुसाहट, लोगों के चिंतित चेहरे, ईमेल बार-बार चेक करना। अरुण की नौकरी बच गई, लेकिन कीमत चुकानी पड़ी - काम दोगुना, घंटे लंबे, और उसका बिज़नेस आइडिया अब एक थका हुआ सपना लगता था। कभी-कभी वह देर रात लैपटॉप स्क्रीन को देखता, कर्सर टिमटिमाता रहता, लेकिन शब्द नहीं निकलते। पर दादी के शब्द उसकी याद में बजते रहे - रोज़ एक कदम, चाहे छोटा ही क्यों न हो। उसने तय किया, चाहे कुछ भी हो, रोज़ एक घंटा अपने प्रोजेक्ट को देगा - भले सिर्फ एक पैराग्राफ ही क्यों न लिख पाए।

एक शनिवार, दिमाग साफ करने के लिए वह सामुदायिक मेले में चला गया। हवा में पकौड़ों और इलायची वाली चाय की खुशबू थी। सड़क के दोनों ओर दुकानें सजी थीं - हवा में लहराते रंग-बिरंगे कपड़े, सुबह की धूप में चमकती मिट्टी की हांडियां, और बारीक बुनाई वाली टोकरियां।

वह एक छोटे से स्टॉल पर रुका, जहाँ एक बुजुर्ग व्यक्ति हाथ से बने दीपक बेच रहे थे। "ये बहुत सुंदर हैं," अरुण ने कहा, धीरे से एक दीपक उठाते हुए। बुजुर्ग मुस्कुराए, लेकिन आंखों में हल्की उदासी थी। "यहाँ लोग बस देखते हैं और चले जाते हैं। बिक्री बहुत कम होती है, खर्चा भी मुश्किल से निकलता है।"

अरुण के भीतर एक बिजली-सी चमकी। उसका बिज़नेस आइडिया - स्थानीय कारीगरों को ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म देना - अब सिर्फ एक विचार नहीं, बल्कि सामने खड़ा एक सच था।

नई ऊर्जा के साथ उसने काम शुरू किया। शाम को वेबसाइट डिज़ाइन सीखना, वीकेंड पर प्रोडक्ट की तस्वीरें लेना, और रात में कारीगरों की कहानियां लिखना। अब मक़सद सिर्फ "बिज़नेस शुरू करना" नहीं था, बल्कि ऐसे लोगों को मंच देना था, जिन्हें कोई देखता भी नहीं। शुरुआत में ही अरुण ने एक नियम बनाया - कारीगरों को सम्मान देना। उन्हें पहले पेमेंट देना, मुनाफे का साफ़ बंटवारा करना, और पैकेजिंग व कीमत सुधारने में मदद करना।

एक दिन, एक बुजुर्ग कारीगर ने उसे एक दीपक दिया, भूरे कागज़ में लपेटकर। "ये बेचने के लिए नहीं, बेटा। ये तुम्हारे लिए है। क्योंकि तुमने हमें देखा, जब कोई और नहीं देखता था।"उस क्षण, अरुण ने महसूस किया - दया सिर्फ अच्छाई नहीं, बल्कि विश्वास और मजबूती की नींव है।

इसी समय, उसने बिस्तर के पास एक छोटा नोटबुक रखना शुरू किया। हर रात, वह तीन बातें लिखता, जिनके लिए वह आभारी था - दोस्त का फोन, बारिश की खुशबू, ठंडी रात में गर्म चाय का प्याला। बुरे दिनों में यह कठिन था, लेकिन इन्हीं दिनों यह आदत सबसे ज़्यादा ज़रूरी साबित होती थी। कृतज्ञता उसका लंगर बन गई, जो तूफ़ानों में भी उसे स्थिर रखती थी।

एक साल बाद, उसकी वेबसाइट एक लाइफस्टाइल मैगज़ीन की नज़र में आई। उन्होंने "स्थानीय कारीगरी का डिजिटल सफ़र" पर फीचर किया, और रातों-रात ऑर्डर दोगुने हो गए। काम बढ़ा, चुनौतियाँ भी - देर रात पैकिंग, कूरियर में देरी, और कभी-कभी खुद पर शक।

लेकिन हर हल की गई समस्या उसके रास्ते में एक नई ईंट जोड़ देती थी। दो साल बाद, अरुण एक छोटे गोदाम में खड़ा था - चारों ओर दीपक, टोकरी और मिट्टी के बर्तन, देशभर भेजने के लिए तैयार। उसके पास निवेशक थे, एक छोटी टीम थी, और ऐसे कारीगर, जो अब सम्मानजनक आय कमा रहे थे। बाहर से यह एक अचानक मिली सफलता लग रही थी, लेकिन अरुण जानता था - यह हज़ारों छोटे कदमों की देन थी, जो उसने थकान, अनिश्चितता और डर के बीच उठाए थे। एक गर्मी की शाम, वह फिर दादी के पास पहुँचा। वह अपनी पुरानी कुर्सी पर बैठी थीं, अब भी उसी लय में सुई चला रही थीं।
"मैंने आपकी सलाह मान ली," उसने कहा। "छोटे-छोटे कदम, रोज़।"
दादी ने ऊपर देखा, आंखों में चमक थी। "और ?"
"और... मैं इतनी दूर आ गया हूँ, जितना कभी सोचा भी नहीं था।" वह मुस्कुराईं। "छोटे कदमों का यही जादू है। जब तक एहसास होता है, तुम किसी खूबसूरत जगह पर पहुंच चुके होते हो।"

कभी-कभी हमें लगता है कि हमारी मेहनत का कोई परिणाम नहीं मिल रहा, जैसे हम बिना किसी बदलाव के रोज़ वही काम दोहराते जा रहे हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि हर प्रयास का अपना असर होता है, भले ही वह हमें तुरंत न दिखे। जैसे मिट्टी के भीतर चुपचाप जड़ें फैलाती हुई पौध को बाहर आने में समय लगता है, वैसे ही हमारे प्रयास भी पहले भीतर से हमें मजबूत बनाते हैं। यह समय हमें धैर्य, अनुशासन और आत्मविश्वास सिखाता है। जब सही समय आता है, तो वही अदृश्य मेहनत हमें ऐसी ऊँचाइयों पर ले जाती है, जिसकी हमने कल्पना भी नहीं की थी। इसलिए यह समझना ज़रूरी है कि हर प्रयास, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो, हमें हमारी मंज़िल के एक कदम और करीब ले जाता है।

अरुण की यात्रा छलांगों की नहीं, बल्कि अनगिनत छोटे कदमों की थी - हर कदम अपने साथ एक सीख लिए हुए: छोटे कदम बड़ी रफ़्तार में बदल जाते हैं, सहनशीलता आसान समय में नहीं, मुश्किल में बनती है, मक़सद मेहनत को मायने देता है, दया हर रिश्ते को मजबूत बनाती है, कृतज्ञता दिल को हल्का रखती है, खुद पर विश्वास बाकी सबके विश्वास से पहले आता है।

पहाड़ दूर लग सकता है। रास्ता लंबा लग सकता है। लेकिन अगर तुम चलते रहो - एक टांका, एक कदम, एक साहसिक काम - तो तुम मंज़िल तक ज़रूर पहुँचोगे। और जब वहाँ पहुँचोगे, तो समझोगे कि असली इनाम तो सफ़र ही था।

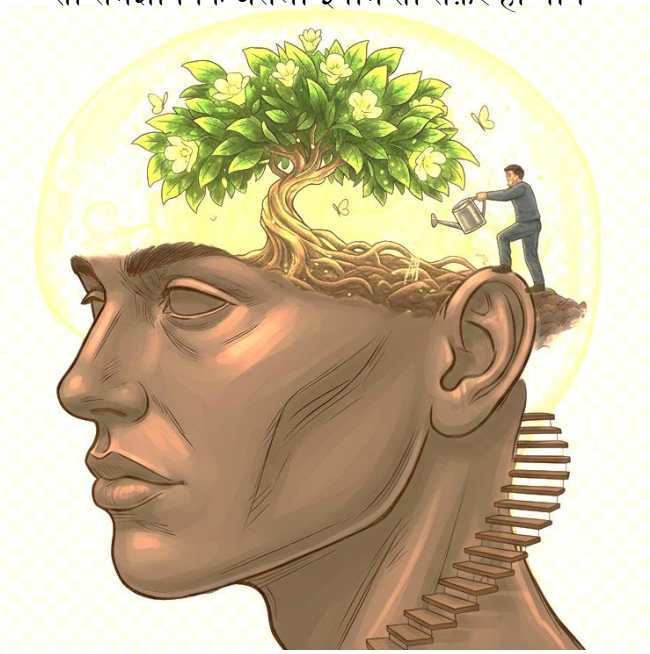

बक्सा

श्री पुष्पेंद्र पँवार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गर्मियों की चिलचिलाती दोपहर थी। स्टेशन की भीड़ हमेशा की तरह बेचैन, अधीर और जल्दी में थी। कहीं कोई कुली सूटकेस खींच रहा था, तो कहीं चाय वाला गिलासों की खनक के साथ आवाज़ दे रहा था - "गरम-गरम चाय, लो भैया चाय!" सीटी की तीखी आवाज़ ने माहौल को और भी बेचैन कर दिया। प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ी ट्रेन के डिब्बों में यात्री चढ़ने की होड़ में थे। इसी अफ़रातफ़री के बीच, एक दुबला-पतला, झुर्रियों से भरा चेहरा लिए, पचास के आस-पास का आदमी धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ एक डिब्बे में चढ़ा। उसके हाथ में एक पुराना, लकड़ी का बक्सा था, जिस पर पुराने समय के लोहे के कुंडे लगे थे। बक्सा न बहुत बड़ा था, न बहुत छोटा- लेकिन इतना भारी ज़रूर कि उठाते वक्त उसके हाथ थोड़े काँप रहे थे।

उसके कपड़े धुले हुए तो थे, पर फीके और घिसे-पिटे। पैरों में घिसी हुई चप्पलें थीं। माथे पर पसीने की लकीरें और आँखों में थकान साफ़ झलक रही थी। डिब्बे में जगह देखकर वह धीरे से खिड़की के पास वाली बर्थ पर बैठ गया और बक्सा बर्थ के नीचे सरका दिया। कुछ यात्री उसकी ओर देखते रहे। एक युवक ने पास बैठी महिला से फुसफुसाते हुए कहा,"अजीब-सा बक्सा है... कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं ?" महिला ने हल्की मुस्कान के साथ कंधे उचका दिए, लेकिन आँखों में जिज्ञासा थी।

ट्रेन चल पड़ी। पहियों की घर्र-घर्र और पटरियों की लयबद्ध खटखट में सफ़र आगे बढ़ने लगा। कुछ देर बाद एक छोटे स्टेशन पर ट्रेन रुकी। वह आदमी धीरे से उठा, जेब से सिक्कों का एक छोटा-सा बंडल निकाला और बाहर उतर गया। जाते-जाते उसने बस इतना कहा - "थोड़ी देर में आता हूँ, कुछ खाने का लाऊँगा।"उसके जाते ही डिब्बे में हलचल बढ़ गई। यात्रियों की नज़र अब बार-बार बर्थ के नीचे पड़े बक्से पर जा रही थी। तभी दरवाज़े से दो पुलिसकर्मी अंदर आए ...

"चेकिंग हो रही है, सभी यात्री अपना सामान दिखाएँ," एक सिपाही ने आदेश दिया।

एक-एक कर सबने अपने बैग और सूटकेस दिखाए। फिर सिपाही की नज़र उस लकड़ी के बक्से पर पड़ी।
उसने पूछा - "ये किसका है ?"

सन्नाटा छा गया। किसी ने जवाब नहीं दिया। एक आदमी बोला, "हमारा नहीं है, साहब।"

दूसरा बोला, "आजकल बम की खबरें बहुत आ रही हैं... हो सकता है..." कुछ ने सहमति में सिर हिला दिए।

"साहब, इसे प्लेटफ़ॉर्म पर छोड़ दीजिए, न जाने किसका है," किसी ने कहा.... पुलिस ने एहतियात बरतते हुए बक्सा उठाया और प्लेटफ़ॉर्म नंबर तीन के एक किनारे, खंभे के पास रख दिया। फिर वे ट्रेन में लौट आए, मानो उनका काम पूरा हो गया हो। थोड़ी देर बाद वह आदमी लौट आया, हाथ में स्टील की थाली, जिसमें दो समोसे और हरी चटनी थी। वह बैठकर खाने लगा, लेकिन नज़र जैसे ही बर्थ के नीचे गई- वह ठिठक गया।

डिब्बे में सन्नाटा गहरा गया। जिन लोगों ने शक की नज़र से देखा था, उनकी आँखें झुक गईं एक बुज़ुर्ग यात्री धीरे से बोले - "बेटा, ट्रेन अभी यहीं खड़ी है... चलो, प्लेटफ़ॉर्म नंबर तीन पर देखते हैं।"

चेहरे का रंग उड़ गया, माथे पर पसीना छलक आया। वह हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ और कांपती आवाज़ में बोला –
"मेरा बक्सा... कहाँ गया?"
किसी ने लापरवाही से कहा, "अरे, पुलिस ले गई, प्लेटफ़ॉर्म पर छोड़ आई।"

उसकी आँखों में डर और बेबसी उभर आई। धीरे-धीरे बैठते हुए उसने कहा –
"उस बक्से में... मेरी बेटी के लिए टीवी था। उसके ससुराल वाले दहेज के लिए तंग कर रहे हैं। नए टीवी की मांग कर रहे थे... नया खरीदने की औकात नहीं थी, तो घर का पुराना ही देने चला था... सोच रहा था शायद इससे उनकी मारपीट, ताने रुक जाएँ..."

वह आदमी, कुछ यात्री और वह बुज़ुर्ग एक साथ नीचे उतरे। प्लेटफ़ॉर्म नंबर तीन पर भागते हुए पहुँचे तो कोने में, खंभे के पास, वही बक्सा रखा था- धूल से सना, लेकिन सही-सलामत।

आदमी दौड़कर पहुँचा, दोनों हाथों से बक्सा उठाया और सीने से लगा लिया। आँखों से आँसू टपक पड़े।

वापस ट्रेन में लौटते समय किसी की हिम्मत नहीं हुई उनसे आँख मिलाने की। सफ़र फिर शुरू हुआ, लेकिन डिब्बे में अब कोई हल्की-फुल्की बात नहीं हो रही थी। बस पटरियों की खटखट और एक भारी खामोशी - जिसमें शर्म, पछतावा और देर से जागी इंसानियत की कसक थी .....

छोटे छोटे प्रयास, बड़े बड़े सपने

श्री ओम प्रकाश मीना
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी

पूर्वी भारत के एक छोटे से गाँव की बात है। उस गाँव से सबसे निकटतम अस्पताल लगभग 30 किलोमीटर दूर था । अगर कोई पैदल जाना चाहता, तो उसे एक पहाड़ी पार करनी पड़ती थी । यह पहाड़ी गाँव से 3-4 किलोमीटर दूर थी। उसी गाँव में एक व्यक्ति रहता था। एक दिन उस व्यक्ति की पत्नी प्रसव पीड़ा में थीं । वह व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के साथ अपनी गर्भवती पत्नी को चारपाई पर रखकर उस पहाड़ी को पार करने की कोशिश करने लगा। दुर्भाग्यवश, उसकी पत्नी गहरी ढलान वाली जगह पर गिर पड़ती हैं और माँ और बच्चे दोनों की मृत्यु हो जाती है।

उस घटना के बाद उस व्यक्ति ने एक दृढ़ संकल्प लिया और छैनी और हथौड़े की मदद से पहाड़ी काटने का कार्य शुरू किया। उस व्यक्ति ने लगभग दो दशक तक दृढ़ निश्चय, समर्पण, मेहनत और निरंतरता के साथ पहाड़ को काटने का कार्य जारी रखकर रास्ता बना दिया । अब वहां पक्की सड़क बन चुकी है और अस्पताल पहुँचने में मुश्किल से 15-20 मिनट लगते हैं। उस व्यक्ति का नाम था दशरथ मांझी । यह कहानी स्पष्ट रूप से दिखाती है कि "छोटी-छोटी लगातार की गई कोशिशें, बड़े से बड़े कार्य करने में मददगार होती हैं।"

"छोटे छोटे प्रयास" से हमारा क्या तात्पर्य है ?

यहाँ छोटे-छोटे प्रयासों का तात्पर्य है, छोटे छोटे कदम जो व्यक्ति को बड़े लक्ष्य की ओर ले जाते हैं । उदाहरण के तौर पर - ब्रिटिशों ने एक-एक राज्य पर धीरे-धीरे विजय प्राप्त की थी। उसके बाद यह प्रक्रिया युद्ध, कूटनीति और नीतियों के माध्यम से चलती रही; परिणामस्वरूप 1757 से 1947 तक ब्रिटिश शासन कायम रहा।

'बड़े सपने' क्या हैं ?

'बड़े सपने' का तात्पर्य ऐसे लक्ष्य से है, जिनका बड़े पैमाने पर प्रभाव पड़ता है और छोटे-छोटे प्रयासों से पूरा होता है । उदाहरण के तौर पर, स्वच्छ भारत मिशन में गाँव से लेकर तहसील, ज़िला और राष्ट्रीय स्तर तक छोटी-छोटी पहलें करके बड़ा बदलाव लाया गया।

विभिन्न क्षेत्रों में छोटे कदम, बड़े सपनेः

जल प्रबंधनः

जल प्रबंधन के लिए बड़े बांधों की बजाय छोटे चेक डैम बनाये जा रहे हैं। इसके पारिस्थितिकीय और वित्तीय फायदे हैं और यह सरकारों पर वित्तीय भार कम करता है।

ऊर्जा क्षेत्रः

सरकार निजी क्षेत्र को सौर ऊर्जा में निवेश व प्रेरित कर रही है- भारत के 500 GW अक्षय ऊर्जा लक्ष्य की ओर यह छोटे-छोटे कदम बहुत मायने रखते हैं।

कृषि क्षेत्रः

कृषकों की आय बढ़ाने हेतु एमएसपी, उचित मूल्य, खाद-उर्वरक की सब्सिडी और पीएम-किसान सम्मान निधि योजना जैसे कदम उठाए गए जिनमें ₹6000 प्रति वर्ष सीधे किसानों को लाभान्वित किया गया। इन सभी क्षेत्रों में छोटे-छोटे प्रयासों ने मिलकर बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने में अहम भूमिका निभाई।

बड़े कदम क्यों हमेशा कारगर नहीं?

अगर बड़े कदम बिना समझ-विश्लेषण व धैर्य से उठाएं जाएँ, तो विफलता के अवसर बढ़ जाते हैं:

उदाहरणः श्रीलंका में जैविक खेती पर अचानक जोर देने से खाद्यान्न संकट उत्पन्न हुआ क्योंकि जैविक खेती में उत्पादन कम होता है। *दूसरी ओर* - चंद्रमा पर सीधी लैंडिंग कराने के लिए रूस का Luna-25 अभियान तेज गति के कारण असफल हो गया, जबकि भारत का Chandrayaan-3, छोटे-छोटे चरणों में सफलतापूर्वक उतरा। इससे स्पष्ट होता है कि सुसंगठित, धीरे-धीरे और अनुशासित प्रयास से ही सफलता सम्भव है।

छोटे-छोटे कदम - कैसे और क्यों जरूरी?

अंतिम लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा के लिए व्यक्ति में धैर्य, समर्पण, दृढ़ता आदि आवश्यक गुण होने चाहिए। छोटे-छोटे कदम समय पर सुधार व सीख प्रदान करते हैं और विश्लेषण, फीडबैक व निरंतर सुधार से परिणाम में गुणात्मक उन्नति होती है।

उदाहरणस्वरूप सरकार प्लास्टिक बंद करने की दिशा में कदम उठा रही है लेकिन वैकल्पिक व्यवस्था तैयार किए बिना वह पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सकती। ऐसे सतत प्रयासों व जागरूकता से ही यह संभव है।

"करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निशान।।"

इसका अर्थ है-बार-बार अभ्यास से ही मूर्ख भी विद्वान बन जाता है, और रस्सी से पत्थर पर निशान बनते हैं।

इसलिए जीवन में हमें छोटे-छोटे कदम उठाते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए। क्योंकि यह दिन - प्रतिदिन का निरंतर प्रयास बड़ा परिवर्तन लाता है।

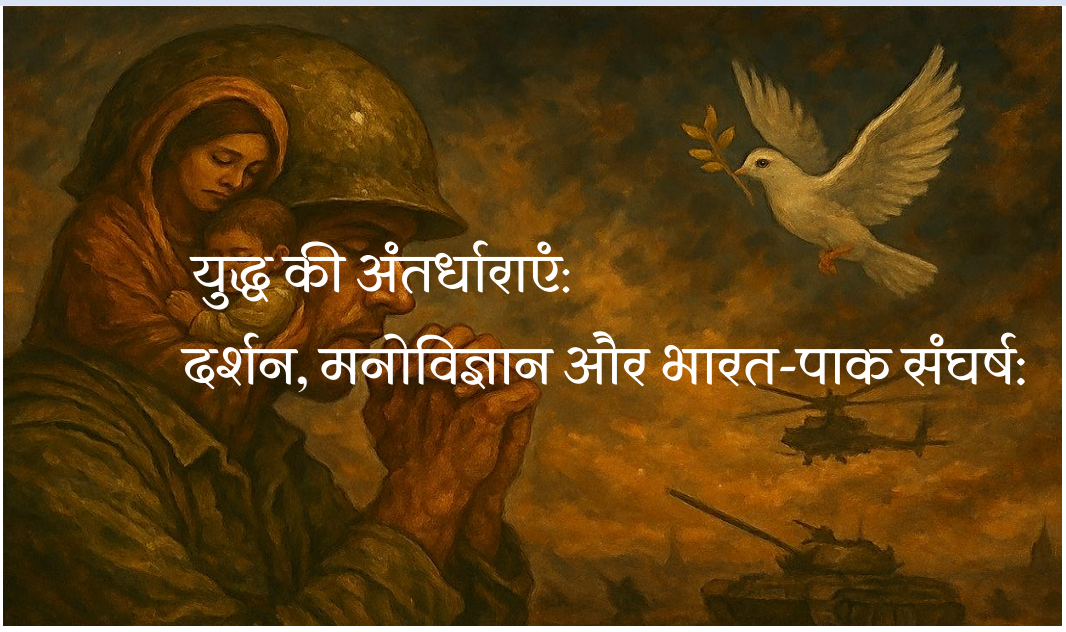

युद्ध की अंतर्धाराएं: दर्शन, मनोविज्ञान और भारत-पाक संघर्ष:

श्री गोपेश कुमार
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी

युद्ध, एक ऐसा शब्द जो इतिहास के पन्नों पर रक्त से लिखा गया है, केवल तोपों की गर्जना और सैनिकों के चीत्कार तक सीमित नहीं। यह मानव मन की उस जटिल भूलभुलैया का प्रवेश द्वार है, जहाँ भय, घृणा और अस्तित्व की आदिम इच्छाएं आपस में टकराती हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच हुए संघर्ष, इस मानवीय त्रासदी के ज्वलंत उदाहरण हैं, जो हमें न केवल सीमाओं पर लड़े गए युद्धों की भयावहता दिखाते हैं, बल्कि हमारे भीतर छिपे उस शाश्वत द्वंद्व को भी उजागर करते हैं। यह लेख युद्ध के बहुआयामी स्वरूप का अन्वेषण करता है, जिसमें दर्शन, मनोविज्ञान और आध्यात्मिकता के गहन पहलुओं के साथ-साथ भारत और पाकिस्तान के बीच हुए रक्तरंजित इतिहास का विश्लेषण भी शामिल है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: विभाजन की छाया और युद्धों का सिलसिला

भारत और पाकिस्तान का संबंध उस त्रासदीपूर्ण विभाजन की नींव पर टिका है, जिसे महात्मा गांधी ने "मानवता की हार" करार दिया था। इस विभाजन ने न केवल भौगोलिक सीमाएं खींचीं, बल्कि दिलों में ऐसी खाई पैदा कर दी, जिसने दशकों तक दोनों देशों को संघर्ष की आग में झोंके रखा। 1947 से लेकर 1999 के कारगिल युद्ध तक, चार बड़े युद्ध इस कटु इतिहास के साक्षी रहे हैं, जिनमें अनगिनत सैनिकों और नागरिकों ने अपनी जान गंवाई और करोड़ों लोगों का जीवन स्थायी रूप से प्रभावित हुआ।

1947-48 का पहला युद्ध कश्मीर के नाजुक मुद्दे पर लड़ा गया, जिसके परिणामस्वरूप जम्मू-कश्मीर का एक हिस्सा पाकिस्तान के नियंत्रण में चला गया, जिसे आज हम पाक-अधिकृत कश्मीर (PoK) के नाम से जानते हैं। 1965 का युद्ध, हालांकि अपेक्षाकृत छोटा था, लेकिन इसने दोनों देशों के बीच शत्रुता की भावना को और गहरा कर दिया। ताशकंद समझौते के बावजूद, वास्तविक नियंत्रण रेखा (LoC) एक विवादित सीमा बनी रही।

1971 का युद्ध एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जब भारत ने बांग्लादेश की स्वतंत्रता में निर्णायक भूमिका निभाई। यह युद्ध न केवल एक रणनीतिक विजय थी, बल्कि मानवीय मूल्यों की जीत भी थी, जहाँ भारत ने पड़ोसी देश के उत्पीड़ित नागरिकों के लिए खड़े होकर एक नए

राष्ट्र के जन्म में सहयोग दिया। इस युद्ध में लगभग 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों का आत्मसमर्पण, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का सबसे बड़ा सैन्य आत्मसमर्पण था, जो पाकिस्तान के लिए एक गहरा मनोवैज्ञानिक आघात था।

1999 का कारगिल युद्ध, ऊँची पहाड़ियों पर पाकिस्तानी घुसपैठ का परिणाम था, जिसे भारतीय सेना ने बहादुरी से खदेड़ दिया। यह युद्ध दुर्गम परिस्थितियों में लड़ी गई वीरता और दृढ़ संकल्प की एक ज्वलंत मिसाल है, जिसने एक बार फिर रणनीतिक संतुलन भारत के पक्ष में किया। इन युद्धों के आंकड़ों के पीछे अनगिनत कहानियाँ हैं - वीर सैनिकों के बलिदान, विस्थापित परिवारों का दर्द, और सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों का अनिश्चित जीवन।

युद्ध का दार्शनिक मंथन: धर्म और कर्तव्य की कसौटी

भारतीय दर्शन में युद्ध को हमेशा हिंसा के पर्याय के रूप में नहीं देखा गया है। भगवद्गीता में कुरुक्षेत्र का महासंग्राम, दो परिवारों के बीच सत्ता का संघर्ष मात्र नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म, कर्तव्य और मोह के बीच एक शाश्वत द्वंद्व का प्रतीक है। श्रीकृष्ण का अर्जुन को दिया गया उपदेश युद्ध के नैतिक आयामों पर गहरा प्रकाश डालता है - युद्ध तब न्यायसंगत है जब वह धर्म की स्थापना और रक्षा के लिए लड़ा जाए:"धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।"

इस दार्शनिक दृष्टिकोण से देखें तो भारत-पाक युद्धों में भी कुछ ऐसे क्षण आए जब नैतिक अनिवार्यता का तत्व दिखाई देता है, विशेष रूप से 1971 का युद्ध। हालांकि, युद्ध की जटिल वास्तविकता अक्सर राजनीतिक और रणनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित होती है, जिससे धर्मयुद्ध की आदर्शवादी अवधारणा धुंधली पड़ जाती है। बौद्ध और जैन धर्म जैसे अहिंसावादी दर्शन युद्ध को मानवीय पीड़ा का चरम मानते हैं, जबकि शक्ति की उपासना की वकालत करने वाले स्वामी विवेकानंद जैसे विचारक आवश्यकता पड़ने पर प्रतिरोध को दुर्बलता नहीं मानते। युद्ध की दार्शनिक पड़ताल हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हिंसा कभी भी पूर्णतः न्यायसंगत हो सकती है, और यदि हाँ, तो किन परिस्थितियों में ?

मनोवैज्ञानिक आघात: युद्ध की छाया मानव मन पर युद्ध केवल रणभूमि पर नहीं लड़ा जाता, इसकी गहरी छाया मानव मस्तिष्क पर भी पड़ती है। युद्ध से पहले भय, असुरक्षा और घृणा की भावनाएं सैनिकों और नागरिकों दोनों के मन में घर कर जाती हैं। युद्ध के दौरान, क्रोध, प्रतिशोध और उन्माद का मनोविज्ञान हावी होता है, जो मानवीय विवेक को धुंधला कर देता है। युद्ध की समाप्ति के बाद, पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (PTSD), अवसाद, चिंता, अनिद्रा और आत्महत्या जैसे गंभीर मानसिक स्वास्थ्य मुद्दे सामने आते हैं।

भारत और पाकिस्तान दोनों ही देशों के सैनिकों में युद्ध के बाद मानसिक रोगों की उच्च दर देखी गई है। 1999 के कारगिल युद्ध के बाद किए गए अध्ययनों से पता चला है कि लगभग 20% सैनिक PTSD से पीड़ित थे। यह आंकड़ा हमें यह सोचने पर विवश करता है कि युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद भी, हम अनगिनत मानसिक और भावनात्मक घाव छोड़ जाते हैं। सैनिकों के परिवार भी इस मनोवैज्ञानिक त्रासदी से अछूते नहीं रहते; वे अपने प्रियजनों की सुरक्षा की चिंता,

उनकी वापसी के बाद के व्यवहार में बदलाव और युद्ध के दीर्घकालिक परिणामों से जूझते हैं।

सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले नागरिक लगातार हिंसा और अनिश्चितता के माहौल में जीते हैं, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। युद्ध के मनोवैज्ञानिक प्रभावों को समझना और इससे प्रभावित लोगों के लिए पर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य सहायता और पुनर्वास प्रदान करना एक महत्वपूर्ण मानवीय दायित्व है।

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि: क्या युद्ध आत्मा की पराजय है?

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र "अहिंसा परमो धर्म:" रहा है। बुद्ध, महावीर और गांधी जैसे महान आत्माओं ने हिंसा का पुरजोर विरोध किया और शांति तथा करुणा का मार्ग दिखाया। फिर भी, इतिहास गवाह है कि जब अत्याचार की सीमाएं टूट जाती हैं और संवाद के सभी रास्ते बंद हो जाते हैं, तो क्या पूर्ण अहिंसा ही एकमात्र विकल्प बचता है ?

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, “शक्ति की उपासना किए बिना शांति की बात करना दुर्बलता है।” हमारी संस्कृति में युद्ध को स्वाभाविक रूप से नकारा गया है, लेकिन जब यह अपरिहार्य हो जाए, तो उसे धर्मयुद्ध के रूप में देखने की परंपरा भी रही है - एक ऐसा संघर्ष जो उच्च नैतिक सिद्धांतों और न्याय की रक्षा के लिए लड़ा जाए। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, युद्ध को आत्मा की विफलता के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि यह प्रेम, करुणा और एकता के मूलभूत आध्यात्मिक मूल्यों का उल्लंघन करता है। युद्ध में शामिल प्रत्येक व्यक्ति, चाहे विजेता हो या पराजित, कहीं न कहीं मानवीयता के उस साझा धागे को कमज़ोर करता है जो हमें आपस में जोड़ता है। युद्ध के कर्मिक परिणाम भी गहरे होते हैं, जो न केवल व्यक्तियों बल्कि पूरे राष्ट्रों के भविष्य को प्रभावित करते हैं। शांति और करुणा का मार्ग ही आध्यात्मिक विकास और सच्ची मानवीय उन्नति का मार्ग है।

यथार्थ की कठोरता: युद्ध के तथ्य और भू-राजनीतिक परिदृश्य भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध केवल सैन्य संघर्ष नहीं थे; वे भू-राजनीतिक, कूटनीतिक और सांस्कृतिक कारकों का एक जटिल संगम थे। 1947-48 के युद्ध ने कश्मीर के विभाजन को स्थायी बना दिया। 1965 के युद्ध के बाद हुए ताशकंद समझौते से कोई स्थायी समाधान नहीं निकला। 1971 के युद्ध ने न केवल बांग्लादेश को जन्म दिया बल्कि दक्षिण एशिया के शक्ति संतुलन को भी बदल दिया। 1999 के कारगिल युद्ध में भारत की सामरिक जीत ने यह स्पष्ट कर दिया कि सीमा पर किसी भी तरह के दुस्साहस का करारा जवाब दिया जाएगा।

मई 2025 में भारत और पाकिस्तान के बीच एक बार फिर तनावपूर्ण हालात उत्पन्न हुए जब जम्मू-कश्मीर के राजौरी और पुंछ क्षेत्रों में पाकिस्तानी सेना द्वारा संघर्ष विराम का उल्लंघन किया गया, जिसमें कई भारतीय सैनिक शहीद हुए। जवाबी कार्रवाई में भारतीय सेना ने लक्षित हमले कर आतंकवादी लॉन्चपैड्स और पाकिस्तानी सैन्य चौकियों को नुकसान पहुँचाया। यह टकराव हालांकि पूर्ण युद्ध में नहीं बदला, लेकिन इसने फिर एक बार इस सच्चाई को रेखांकित किया कि दोनों देशों के बीच शांति कितनी नाज़ुक डोर पर टिकी है। इस घटना के बाद दोनों देशों की सीमाओं पर अलर्ट बढ़ा दिया गया और अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने

संयम बरतने की अपील की। यह हालिया संघर्ष इस बात का प्रमाण है कि जब तक स्थायी समाधान नहीं खोजा जाता, सीमावर्ती इलाकों में अस्थिरता बनी रहेगी और युद्ध की संभावना हमेशा सिर उठाती रहेगी।

इन युद्धों ने दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर भारी बोझ डाला, सामाजिक ताने-बाने को कमजोर किया और पीढ़ियों तक अविश्वास और शत्रुता की भावना को जीवित रखा। वास्तविक नियंत्रण रेखा (LoC) आज भी एक संवेदनशील और सैन्यीकृत क्षेत्र है, जहाँ संघर्ष की आशंका हमेशा बनी रहती है। युद्ध के तथ्यों पर निष्पक्ष दृष्टि डालना आवश्यक है ताकि हम अतीत की गलतियों से सीख सकें और भविष्य में शांति और सहयोग का मार्ग प्रशस्त कर सकें।

निष्कर्ष: युद्ध की राख से शांति के अंकुर

युद्ध की व्याख्या मात्र विजय या पराजय के संकीर्ण दायरे में नहीं की जा सकती। यह अक्सर उस अनदेखी पीड़ा और अन्याय का प्रत्यक्ष परिणाम होता है जिसे हम वर्षों तक नजरअंदाज करते हैं। भारत और पाकिस्तान दोनों को यह गहन सत्य समझने की आवश्यकता है कि वास्तविक और स्थायी विजय युद्ध में नहीं, बल्कि शांति, संवाद और साझा विकास में निहित है।

युद्ध हमें आत्मनिरीक्षण के गहन पथ पर ले जाता है - यह हमारे भीतर छिपी हिंसा, घृणा और शक्ति की अतृप्त पिपासा को उजागर करता है। यदि हम इस विनाशकारी संघर्ष से कुछ सीखकर आत्म-विकास और सहिष्णुता की ओर बढ़ें, तो शायद यह बाहरी युद्ध भी हमारे भीतर एक आंतरिक पुनर्जन्म का कारण बन सकता है। जैसा कि किसी ने सच ही कहा है, "युद्ध के बाद जो बचे, वे ही बताएं कि क्या उन्होंने कुछ पाया - या केवल अपनों को खोया ?" अब समय है कि हम युद्ध की विभीषिका को त्यागकर शांति, सहयोग और आपसी समझ का मार्ग चुनें, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ हिंसा और शत्रुता के अभिशाप से मुक्त हो सकें। युद्ध की राख पर ही शांति के नए अंकुर फूट सकते हैं, यदि हम उन्हें प्रेम और सद्भाव से सींचें।

"बच्चों और युवाओं में मोबाइल फोन की लत: एक बढ़ता संकट"

सुश्री जे आर मालविका
सुपुत्री राखी पी ओ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रस्तावना

तकनीक ने आज मानव जीवन को अत्यंत सुविधाजनक बना दिया है। मोबाइल फोन ने तो जैसे पूरी दुनिया को हमारी हथेली में समेट दिया है। यह उपकरण अब केवल संचार का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। परंतु, जहां एक ओर मोबाइल ने जीवन को सरल बनाया है, वहीं दूसरी ओर यह बच्चों और युवाओं में एक गहरी लत का रूप लेता जा रहा है। यह लत न केवल मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है, बल्कि सामाजिक, शैक्षणिक और नैतिक मूल्यों पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

मोबाइल फोन की आवश्यकता बनाम लत

मोबाइल फोन की उपयोगिता से कोई इनकार नहीं कर सकता। पढ़ाई, ऑनलाइन कक्षाएं, आपातकालीन संपर्क, सूचना का आदान-प्रदान, मनोरंजन - इन सभी कार्यों में मोबाइल उपयोगी है। लेकिन जब इसका प्रयोग सीमाओं को पार करने लगे, तो यह लत का रूप ले लेता है।

बच्चे और युवा वर्ग मोबाइल का सबसे अधिक उपयोग करने वाले समूह हैं। ऑनलाइन गेम, सोशल मीडिया, वीडियो स्ट्रीमिंग, रील्स, चैटिंग ऐप्स - इन सबने इनकी दिनचर्या पर कब्जा कर लिया है। कई बार तो मोबाइल के बिना कुछ समय भी बिताना उनके लिए कठिन हो जाता है, और यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है।

मोबाइल की लत के लक्षण

मोबाइल की लत के कुछ प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं:

1. घंटों स्क्रीन के सामने रहना – पढ़ाई, खेल, परिवार से बातचीत आदि सब कुछ पीछे छूट जाता है।

2. नींद की कमी – रात-रात भर सोशल मीडिया या गेम खेलना सामान्य बात हो गई है।

3. चिड़चिड़ापन और गुस्सा – मोबाइल छीनने या बंद करने पर गुस्से में आ जाना।

4. शारीरिक समस्याएं – आँखों में जलन, कमर और गर्दन में दर्द, सिरदर्द, मोटापा आदि।

5. अकेलापन और सामाजिक दूरी – असली दुनिया से कटाव और आभासी दुनिया में खो जाना।

बच्चों और युवाओं पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव

1. शैक्षणिक प्रभाव

मोबाइल की लत के कारण बच्चे पढ़ाई में ध्यान नहीं दे पाते। ऑनलाइन क्लास के दौरान भी उनका ध्यान गेम, चैट या वीडियो पर रहता है। परीक्षा में खराब परिणाम आते हैं जिससे आत्मविश्वास में कमी और तनाव बढ़ता है।

2. मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

लगातार मोबाइल पर वीडियो और सोशल मीडिया के ज़रिए दिखाई जाने वाली मोहकता बच्चों के मन में असंतोष, हीन भावना और अवसाद उत्पन्न करती है। कुछ मामलों में यह डिप्रेशन और एंग्ज़ायटी का रूप भी ले सकता है।

3. शारीरिक स्वास्थ्य पर असर

घंटों बैठकर मोबाइल चलाने से आँखों की रोशनी कम होती है, मोटापा बढ़ता है, नींद की गुणवत्ता घटती है, और शरीर में ऊर्जा की कमी आती है।

4. सामाजिक संबंधों पर प्रभाव

परिवार और दोस्तों से संवाद कम हो जाता है। कई बार मोबाइल का अत्यधिक उपयोग बच्चों को असंवेदनशील बना देता है। वे वास्तविक भावनाओं और समस्याओं को नजरअंदाज़ करने लगते हैं।

5. नैतिक गिरावट और अपराध की ओर झुकाव

कुछ युवा अश्लील कंटेंट, सट्टा गेम्स या अवैध ऐप्स की तरफ आकर्षित हो जाते हैं। यह उन्हें नैतिक रूप से कमज़ोर और अपराध की दिशा में भी धकेल सकता है।

मोबाइल लत के प्रमुख कारण

1. अभिभावकों की लापरवाही: – कई माता-पिता बच्चों को चुप कराने या व्यस्त रखने के लिए खुद ही मोबाइल दे देते हैं।

2. कोविड-19 और ऑनलाइन शिक्षा:– महामारी के दौरान जब स्कूल बंद थे, तब मोबाइल पर निर्भरता अत्यधिक बढ़ी।

3. सोशल मीडिया का आकर्षण:– इंस्टाग्राम, यूट्यूब, स्नैपचैट जैसे प्लेटफॉर्म्स ने बच्चों को आभासी पहचान दी है।

4. प्रतिस्पर्धा और तुलना:– 'लाइक' और 'फॉलोअर्स' के पीछे भागना एक तरह का मानसिक दबाव बन गया है।

समाधान के उपाय

1. परिवार की भूमिका

माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों के मोबाइल उपयोग पर निगरानी रखें। बच्चों के साथ समय बिताएँ, संवाद करें और उन्हें वास्तविक दुनिया के अनुभवों से जोड़ें। उन्हें मोबाइल के स्थान पर खेल, पुस्तकें, कला आदि की ओर आकर्षित करें।

2. डिजिटल डिटॉक्स

हफ्ते में एक दिन 'नो-फोन डे' मनाया जा सकता है । इसके साथ ही दैनिक स्क्रीन टाइम को सीमित किया जाना चाहिए ।

3. शिक्षण संस्थानों की भूमिका

स्कूलों को चाहिए कि वे बच्चों को डिजिटल संतुलन के बारे में जागरूक करें । सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ जैसे योग, ध्यान, सामूहिक खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम मोबाइल लत को कम करने में सहायक हो सकते हैं ।

4. प्रेरणा और मार्गदर्शन

बच्चों को मोबाइल से जुड़े दुष्प्रभावों के बारे में कहानियों, फिल्मों या प्रैक्टिकल उदाहरणों द्वारा समझाया जा सकता है । युवाओं को रोल मॉडल्स से जोड़ना भी प्रभावी उपाय हो सकता है ।

5. तकनीकी उपाय

अभिभावक 'पैरेंटल कंट्रोल ऐप्स' का उपयोग करके बच्चों के मोबाइल उपयोग पर नियंत्रण रख सकते हैं । स्क्रीन टाइम लिमिट सेट करना एक सरल और प्रभावी उपाय है ।

मोबाइल फोन की लत से उत्पन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याए

आज का युग तकनीकी प्रगति का युग है, जहाँ मोबाइल फोन ने मानव जीवन को अनेक सुविधाएँ दी हैं । एक समय था जब मोबाइल केवल बात करने का माध्यम था, पर अब यह संपूर्ण जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है । किंतु जिस गति से मोबाइल का उपयोग बढ़ा है, उसी गति से मोबाइल की लत (Phone Addiction) भी बढ़ रही है, विशेषकर युवाओं और किशोरों में । यह लत अब केवल एक व्यवहारिक समस्या नहीं, बल्कि एक गंभीर स्वास्थ्य संकट का कारण बन चुकी है ।

शारीरिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

- आंखों की समस्याएँ

लंबे समय तक स्क्रीन देखने से आंखों में जलन, धुंधला दिखना, सूखापन, और थकावट जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं । इसे "कंप्यूटर विज़न सिंड्रोम" या "डिजिटल आई स्ट्रेन" कहा जाता है । बच्चों और युवाओं की आंखों की रोशनी कम होना आज आम हो गया है ।

- सिरदर्द और माइग्रेन

मोबाइल की स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी (Blue Light) लगातार मस्तिष्क को उत्तेजित करती है, जिससे सिरदर्द, माइग्रेन और अनिद्रा जैसी समस्याएँ हो सकती हैं ।

- कमर और गर्दन में दर्द

मोबाइल चलाते समय शरीर की स्थिति अक्सर झुकी हुई होती है । इसे "Text Neck Syndrome" कहा जाता है । इससे गर्दन, कंधे और रीढ़ की हड्डी में तनाव उत्पन्न होता है, जो लंबे समय में स्थायी दर्द और पोस्चर की खराबी का कारण बन सकता है ।

- नींद की कमी

मोबाइल पर देर रात तक गेम खेलना, वीडियो देखना या चैट करना नींद की गुणवत्ता को प्रभावित करता है । नीली रोशनी मेलाटोनिन हार्मोन के स्त्राव को रोकती है, जिससे नींद आने में

दिक्कत होती है । यह अनिद्रा (Insomnia) और थकावट का कारण बनता है ।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

- तनाव और चिंता

लगातार सोशल मीडिया का उपयोग, तुलना, लाइक्स की दौड़ और आभासी पहचान के पीछे भागना से युवाओं में मानसिक तनाव बढ़ा रहा है । वे छोटी-छोटी बातों में चिंता, असंतोष और हीन भावना महसूस करने लगते हैं ।

- डिजिटल डिप्रेशन

मोबाइल पर अत्यधिक समय बिताने से सामाजिक अलगाव (Social Isolation) होता है । व्यक्ति धीरे-धीरे अकेलापन महसूस करता है और यह धीरे-धीरे डिप्रेशन का रूप ले सकता है ।

- ध्यान की कमी

लगातार नोटिफिकेशन और मल्टीटास्किंग से मस्तिष्क की ध्यान केंद्रित करने की क्षमता घटती है । विद्यार्थी पढ़ाई में मन नहीं लगा पाते और कार्यस्थल पर भी उत्पादकता घटती है ।

बच्चों और किशोरों पर विशेष प्रभाव

- बच्चों में व्यवहारिक बदलाव, जैसे चिड़चिड़ापन, गुस्सा और जिद्दीपन देखने को मिलता है ।
- वे वास्तविक दुनिया से कट जाते हैं और आभासी दुनिया को ही सब कुछ मानने लगते हैं ।
- कई बच्चों में बोलने, समझने और सोचने की क्षमता पर नकारात्मक असर पड़ता है ।
- खेलकूद और शारीरिक गतिविधियाँ कम होने से मोटापा और आलस्य बढ़ता है।

फोन की लत को पहचानना

यदि किसी व्यक्ति में ये लक्षण लगातार दिखें, तो यह संकेत हो सकता है कि वह मोबाइल की लत का शिकार है:

- मोबाइल के बिना बेचैनी होना
- सामाजिक आयोजनों में भाग न लेना
- बार-बार बिना कारण मोबाइल चेक करना
- दिनचर्या का बिगड़ जाना (खाना, नींद, पढ़ाई)

• अकेलेपन या बोरियत में फोन की ओर भागना

समाधान और सुझाव

- नियत समय निर्धारण : हर दिन मोबाइल उपयोग के लिए एक समय तय करें और उस पर अमल करें।
- डिजिटल डिटॉक्स: हर सप्ताह एक दिन ऐसा तय करें जब मोबाइल पूरी तरह बंद रखा जाए या बहुत सीमित उपयोग हो।
- वैकल्पिक गतिविधियाँ: बच्चों और युवाओं को खेल, संगीत, पठन-पाठन, चित्रकारी आदि में रुचि लेने के लिए प्रेरित करें।
- सोने से पहले मोबाइल न चलाएं: कम से कम एक घंटा पहले मोबाइल बंद करें और नीली रोशनी से बचें।
- पैरेंटल गाइडेंस: अभिभावकों को बच्चों के मोबाइल उपयोग पर नजर रखनी चाहिए और संवाद बनाकर उन्हें संयमित उपयोग की शिक्षा देनी चाहिए।

निष्कर्ष

मोबाइल फोन आज की आवश्यकता है, लेकिन जब इसका उपयोग संयम के बजाय अंधाधुंध हो जाए, तो यह एक गंभीर समस्या बन जाती है। बच्चों और युवाओं में मोबाइल की लत हमारे समाज के भविष्य के लिए एक चेतावनी है। यदि समय रहते हम जागरूक न हुए, तो यह लत मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से उन्हें खोखला कर सकती है। इसलिए जरूरी है कि हम सब मिलकर – परिवार, स्कूल, समाज और सरकार – इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाएँ । बच्चों को एक संतुलित, रचनात्मक और स्वाभाविक जीवन जीने में सहायता देना ही हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

जब पानी बढ़ता है:

बाढ़ किस तरह ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था और संस्कृति को बदल रही है

श्री अतुल कृष्ण डी
सुपुत्र श्री कृष्णकुमार वी जी
लेखापरीक्षक

ग्रामीण भारत में, अस्तित्व हमेशा प्रकृति के साथ-साथ रहा है, मानसून की बारिश की शुरुआत में बीज बोना और जलवायु परिवर्तन होने पर फसल काटना। लेकिन अब, बारिश वरदान नहीं रही; यह भारी बाढ़ है जो बहुत नुकसान करती है। बिहार, असम, ओडिशा, उत्तर प्रदेश के इलाके और केरल मौसमी बाढ़ से स्थायी संकट का सामना कर रहे हैं। भूमि और आजीविका के स्रोतों के तत्काल नुकसान के अलावा, बाढ़ गांवों के सोचने, काम करने, जीने और जश्न मनाने के तरीके को बदल रही है।

बाढ़ का आर्थिक प्रभाव नष्ट फसलों से परे है। पारंपरिक खेती विकसित हो रही है क्योंकि फसलें जलमग्न हो रही हैं और पशुधन बढ़ते जल स्तर से मारा जा रहा हैं। अधिकांश किसान, बिना यह जाने कि क्या करना है, पूरी तरह से खेती छोड़ रहे हैं। कुछ परिवार हमेशा के लिए शहरी क्षेत्रों में जा रहे हैं, और अन्य अल्पकालिक फसलें लगा रहे हैं जो पानी को सहन कर सकती हैं, जो कि उपभोग की जा रही चीज़ों और बाज़ारों से माँग की जा रही चीज़ों को बदल रही हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश और उत्तरी बिहार में, बुनाई और मछली पकड़ने जैसे छोटे उद्यम अपने संचालन के तरीके को बदल रहे हैं, हमेशा विकल्प के तौर पर नहीं, बल्कि आवश्यकता के कारण। बाढ़ ग्रामीण समुदायों के संगठित होने के तरीके को भी बदल देती है। जिस सुरक्षा पर लोग कभी निर्भर थे, वह अब ज़मीन के साथ नहीं है। जैसे-जैसे आपदाएँ आम होती जा रही हैं, सांस्कृतिक प्रथाएँ भी बदल रही हैं। शादियाँ स्थगित या छोटी हो रही हैं, सामुदायिक कार्यक्रम छोटे या रद्द हो रहे हैं, और यहाँ तक कि गाँव की इमारतों को भी बदला जा रहा है। ऊँची मंजिलें, स्टील और पोर्टेबल शौचालय पारंपरिक वास्तुशिल्प डिजाइनों की जगह ले रहे हैं, जिनका उद्देश्य बाढ़ के नए क्रम को समायोजित करना है। राहत प्रयासों के आयोजन में महिलाएँ अधिक नेतृत्वकारी भूमिकाएँ संभाल रही हैं, जबकि युवा लोग ऑनलाइन धन उगाहने वाले अभियान शुरू कर रहे हैं और मैसेजिंग ऐप पर पूर्व-चेतावनी समूह बना रहे हैं, जो सामाजिक भूमिकाओं में बदलाव को दर्शाता है जो आवश्यकता से पैदा हुआ है। इन बाहरी प्रभावों के अलावा, बाढ़ का व्यक्तियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ता है, खासकर बच्चों पर जो बाढ़-ग्रस्त क्षेत्रों में बड़े होते हैं। ये बच्चे खुद ही लचीले हो जाते हैं लेकिन अधिक सुरक्षित वातावरण में बड़े होने वाले बच्चों की तुलना में जल्दी परिपक्व होने के लिए मजबूर होते हैं।

परिवारों को एक अमूर्त लागत भी उठानी पड़ती है, अगली बाढ़ की निरंतर चिंता। पीढ़ियों के बीच विश्वास खत्म हो रहा है क्योंकि दादा- दादी की यादें और सामान्य मौसमी घटनाओं की कहानियाँ युवा पीढ़ी के अनुभवों की अप्रत्याशित और विनाशकारी प्रकृति से मेल नहीं खाती हैं। सरकार नियम बनाकर और राहत राशि देकर आपदा प्रबंधन को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है। फिर भी, कई क्षेत्र अभी भी धीमी नौकरशाही से ग्रस्त हैं जो बाढ़ की गति से भी धीमी है। सहायता देर से मिलती है, और भुगतान भी देर से होता है, जिससे प्रभावित परिवारों के लिए मुश्किलें बढ़ जाती हैं। न केवल त्वरित आपदा सहायता बल्कि आपदा की तैयारी की भी तत्काल आवश्यकता है। इनमें जलवायु-लचीली फसलों का विकास, मोबाइल स्वास्थ्य क्लीनिक, फ्लोटिंग स्कूल और स्थानीय त्वरित प्रतिक्रिया दल शामिल हैं जिन्हें आपात स्थिति के दौरान तेजी से और कुशलता से कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। ग्रामीण भारत संघर्ष कर रहा है, लेकिन यह अकेले डूब नहीं रहा है - यह नई वास्तविकताओं के अनुकूल हो रहा है। लेकिन इस अनुकूलन की एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। मौखिक परंपराओं का उन्मूलन, सांप्रदायिक प्रथाओं का क्षरण और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का पतन सांस्कृतिक नुकसान हैं जो आमतौर पर निर्णय लेने वालों और प्रौद्योगिकी-संचालित निगरानी तंत्रों द्वारा अनदेखा किया जाता हैं। भारत जलवायु आपदाओं के प्रति अधिक लचीला बनने का प्रयास कर रहा है, इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि अस्तित्व केवल जल निकासी प्रणालियों और तटबंधों जैसे पहलुओं पर ही निर्भर नहीं है, बल्कि ज्ञान, संस्कृति के संरक्षण और लोगों द्वारा विकसित समाधानों पर भी निर्भर करता है। जीवन के भौतिक और सांस्कृतिक पहलुओं की सराहना करके ही ग्रामीण भारत वास्तव में बढ़ते जल का प्रतिरोध कर सकता है और अधिक लचीला बन सकता है।

सरकार आपदा प्रबंधन सुधारने की कोशिश कर रही है, नियम बना रही है और राहत राशि दे रही है। फिर भी, कई इलाकों में धीमी प्रशासनिक प्रक्रिया बाढ़ की रफ्तार से भी धीमी है। मदद देर से पहुंचती है, भुगतान भी देरी से होता है, जिससे प्रभावित परिवारों की स्थिति और मुश्किल हो जाती है। इसलिए तेज राहत कार्यों के साथ-साथ बेहतर तैयारी की भी ज़रूरत है। इसमें जलवायु-प्रतिरोधी फसलों का विकास, मोबाइल स्वास्थ्य क्लीनिक, तैरते हुए स्कूल और स्थानीय त्वरित प्रतिक्रिया टीमों का गठन शामिल है जो आपातकाल के समय तेजी से और कुशलता से काम कर सकें।

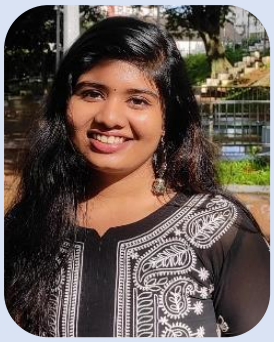

भव्य विवाह समारोह:

प्रेम और वैभव का अद्भुत संगम

सुश्री जे आर मैथिली
सुपुत्री राखी पी ओ, स.लेप.अधिकारी

विवाह जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय होता है, जिसमें दो आत्माएँ न केवल एक-दूसरे से बंधती हैं, बल्कि दो परिवारों का भी मिलन होता है। कुछ विवाह साधारण होते हैं, तो कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपने वैभव, भव्यता और अनूठी प्रस्तुति के कारण वर्षों तक याद किए जाते हैं। एक भव्य विवाह केवल धन-व्यय नहीं होता, बल्कि यह प्रेम, संस्कृति, परंपरा और विलासिता का एक सुंदर संगम होता है।

स्थान की भव्यता: स्वर्ग जैसे आयोजन का आरंभ

इस विवाह की योजना इटली के प्रसिद्ध लेक कोमो (Lake Como) के किनारे स्थित एक ऐतिहासिक विला में बनाई गई थी। झील के किनारे बसा यह महल जैसा विला अपने बगीचों, झील के दृश्य और प्राचीन स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। अतिथियों का स्वागत फूलों से सजे द्वार पर शुद्ध संगीत और ठंडी शैम्पेन के साथ किया गया। विवाह स्थल को गुलाब, लिली और ऑर्किड जैसे हजारों फूलों से सजाया गया था, जिनकी महक पूरे वातावरण को सुरभित कर रही थी। विवाह मंडप को झील के किनारे बनाया गया था, जहाँ सूर्य की हल्की रोशनी और हवा में तैरते पुष्पों ने माहौल को और भी रूमानी बना दिया। प्रत्येक अतिथि के लिए हस्तलिखित आमंत्रण-पत्र और विवाह की कहानी से युक्त एक सुंदर पुस्तिका रखी गई थी।

परिधान और शृंगार: सौंदर्य और शैली का संगम

दुल्हन ने एक विश्वप्रसिद्ध डिज़ाइनर द्वारा तैयार किया गया कस्टम मेड लहंगा पहना, जिसमें सोने और मोतियों की कढ़ाई की गई थी। उसके

घूंघट पर स्वर्ण धागे से उनके वचनों को उकेरा गया था । वहीं दूल्हे ने एक शाही अंदाज़ में रेशमी शेरवानी और जड़ाऊ साफा पहन रखा था, जिसमें उनके कुल की छवि झलकती थी ।

बारात का आगमन शाही घोड़ों और ढोल-नगाड़ों के साथ हुआ । दुल्हन की सहेलियाँ सुनहरे रंग की पोशाकों में थीं और पूरे समारोह में पारंपरिक गीत गा रही थीं, जिससे पूरे माहौल में सांस्कृतिक रंग भर गया ।

भोजन और स्वागत: स्वाद और सजावट का जादू

विवाह समारोह के बाद भोजन का आयोजन किया गया, जो किसी राजसी दावत से कम नहीं था । पाँच-पाँच कोर्स का मेनू तैयार किया गया था, जिसमें पारंपरिक भारतीय व्यंजनों से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्वादों तक सब कुछ शामिल था । खाने में शाही पनीर, कश्मीरी दम आलू, लखनऊ की बिरयानी, इटालियन पास्ता और फ्रेंच डेज़र्ट तक हर प्रकार का स्वाद मौजूद था । सजावट इतनी भव्य थी कि हर मेज पर गुलाब की पंखुड़ियों से भरे क्रिस्टल के कटोरे और सुनहरी मोमबत्तियाँ रखी गई थीं । मिठाई के रूप में 7 परतों वाला केक तैयार किया गया था, जिसमें हर परत में अलग-अलग स्वाद और डिज़ाइन था । केक पर हाथ से बनी चीनी की कलाकृतियाँ और दंपति की छोटी प्रतिमाएँ थीं ।

मनोरंजन: यादों से भरी रात

भव्य विवाह केवल सजावट और भोजन तक सीमित नहीं होता । यह वह मंच होता है जहाँ भावनाएँ, संगीत और आनंद का संगम होता है । इस समारोह में एक प्रसिद्ध गायक ने लाइव प्रस्तुति दी, जिसके रोमांटिक गीतों पर हर कोई झूम उठा । इसके बाद एक इंटरनेशनल डीजे ने ऐसा समा बाँधा कि सब ने रातभर नृत्य किया ।

स्मृति के रूप में सभी मेहमानों को व्यक्तिगत उपहार दिए गए – जैसे की अनूठी सुगंध वाली मोमबत्तियाँ, हस्तनिर्मित चॉकलेट, और नाम लिखे हुए इत्र की शीशियाँ । वहीं एक फोटो बूथ भी तैयार किया गया था, जहाँ अतिथि विभिन्न थीम और परिधानों के साथ यादगार तस्वीरें खिंचवा सकते थे ।

भावनाओं का महत्व: वैभव में भी प्रेम की गहराई

भले ही यह विवाह हर दृष्टि से विलासिता और शोभा का प्रतीक था, लेकिन इसकी सबसे खूबसूरत बात थी उसमें समाहित भावनाएँ । दूल्हे ने अपने भाषण में दुल्हन के दिवंगत पिता को याद किया और उनके नाम एक गीत समर्पित किया, जिससे माहौल भावुक हो गया । हर रस्म, चाहे वह हल्दी की हो, मेहंदी की या फेरों की – हर एक में परिवारजनों की भागीदारी, प्रेम और उत्साह साफ़ झलक रहा था । इस समारोह ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा वैभव सिर्फ धन से नहीं, बल्कि प्रेम और रिश्तों की गरिमा से आता है।

समापन: एक स्वप्न समान विदाई

समारोह के अंत में झील के ऊपर आतिशबाज़ी का नज़ारा था – रोशनी के रंगीन फव्वारे पानी पर पड़कर झील को चाँदनी सा चमका रहे थे । दंपति ने एक लक्ज़री नाव में बैठकर अपने हनीमून की ओर प्रस्थान किया, जैसे कोई परीकथा यहीं समाप्त हो रही हो ।

इंटिमेट वेडिंग के लाभ: सरलता में सुखद जीवन की शुरुआत

विवाह जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय होता है, जहाँ दो आत्माएँ और दो परिवार एक

पवित्र बंधन में बंधते हैं। परंपरागत रूप से विवाह को भव्यता, विशालता और सामाजिक दिखावे का प्रतीक माना जाता रहा है। किंतु बदलते समय और सोच के साथ, अब लोग "इंटिमेट वेडिंग" यानी सीमित अतिथियों के बीच सादगीपूर्ण विवाह को प्राथमिकता देने लगे हैं । ऐसे विवाह समारोह, जहाँ सिर्फ करीबी मित्रों और परिवारजन की उपस्थिति होती है, न केवल अर्थव्यवस्था और समय की दृष्टि से लाभदायक होते हैं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी अधिक जुड़ाव देने वाले होते हैं।

इंटिमेट वेडिंग के प्रमुख लाभ

1. भावनात्मक जुड़ाव और निजीपन

जब समारोह छोटा होता है और उपस्थित लोग आपके बेहद करीबी होते हैं, तो हर क्षण अधिक भावनात्मक और निजी बन जाता है। हर व्यक्ति दूल्हा-दुल्हन से व्यक्तिगत रूप से जुड़ता है, और उनका आशीर्वाद सिर्फ एक रस्म नहीं, बल्कि आत्मीयता से भरा होता है।

2. आर्थिक बचत

भव्य विवाहों में लाखों-करोड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं, जिनका कोई स्थायी उपयोग नहीं होता । इंटिमेट वेडिंग में खर्च नियंत्रित रहता है, जिससे नवविवाहित जोड़ा भविष्य के लिए बचत कर सकता है - जैसे घर खरीदना, यात्रा करना या उच्च शिक्षा में निवेश करना।

3. तनाव रहित आयोजन

बड़े विवाह में कई जिम्मेदारियाँ, रस्मों का दबाव और मेहमानों की चिंता रहती है। वहीं सीमित मेहमानों के साथ होने वाला विवाह सरल, शांत और बिना किसी मानसिक तनाव के सम्पन्न होता है।

4. पर्यावरण के अनुकूल (Eco-Friendly)

बड़े विवाहों में अक्सर अत्यधिक भोजन, बिजली, पानी और सजावट की बर्बादी होती है। इंटिमेट वेडिंग में यह सब न्यूनतम होता है, जिससे यह अधिक सतत (Sustainable) और पर्यावरण के अनुकूल बन जाता है।

5. समय की बचत

कम लोगों, कम रस्मों और सीमित आयोजनों के कारण समय की बचत होती है । दूल्हा-दुल्हन व उनका परिवार मानसिक रूप से भी आराम में रहते हैं और विवाह के हर पल का अच्छी तरह आनंद ले पाते हैं।

6. गुणवत्ता बनाम मात्रा

बड़े विवाह में हम कई बार इतने लोगों को आमंत्रित करते हैं जिनसे वास्तविक संबंध भी नहीं होते। इसके विपरीत, इंटिमेट वेडिंग में केवल वे लोग शामिल होते हैं जिनका जीवन में वास्तविक महत्व है। इससे बातचीत, खुशी और साझा यादें अधिक प्रगाढ़ होती हैं।

कोविड-19 और इंटिमेट वेडिंग की बढ़ती लोकप्रियता

कोविड-19 महामारी ने पूरी दुनिया की जीवनशैली को प्रभावित किया । लॉकडाउन, सामाजिक दूरी और सीमित जमावड़ की आवश्यकताओं ने लोगों को छोटे विवाह समारोहों

की ओर प्रेरित किया। लेकिन धीरे-धीरे लोगों ने यह भी अनुभव किया कि यह न केवल सुरक्षित था, बल्कि अधिक सार्थक और सुखद भी था। आज महामारी समाप्त होने के बाद भी इंटिमेट वेडिंग एक ट्रेंड से बढ़कर एक जीवनशैली विकल्प बन गया है, जिसे युवा पीढ़ी अपना रही है।

इंटिमेट वेडिंग के कुछ रचनात्मक पहलू

- डेस्टिनेशन वेडिंगः सीमित लोगों के साथ किसी खूबसूरत स्थान पर विवाह करना आसान हो जाता है।
- थीम आधारित आयोजनः छोटे आयोजन में रचनात्मक सजावट और थीम लागू करना सरल होता है।
- पर्सनलाइज्ड अनुभवः हर मेहमान को विशेष अनुभव देने का अवसर होता है - जैसे नाम लिखे उपहार, व्यक्तिगत संदेश आदि।

क्या इंटिमेट वेडिंग सभी के लिए सही है ?

हालाँकि इसके अनेक लाभ हैं, परंतु भारत जैसे विविधतापूर्ण और सामूहिक संस्कृति वाले देश में इंटिमेट वेडिंग का चयन करना कई बार सामाजिक दबाव के कारण कठिन होता है। लेकिन यदि परिवार में आपसी समझ और प्राथमिकता स्पष्ट हो, तो यह एक स्मरणीय और सफल विकल्प बन सकता है।

निष्कर्ष

भव्य विवाह केवल चकाचौंध या खर्च का नाम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा आयोजन है जो भावनाओं, परंपराओं और आधुनिकता का अद्वितीय संगम बनकर उभरता है। ऐसा विवाह लोगों की यादों में वर्षों तक जीवित रहता है, क्योंकि वह केवल आँखों को नहीं, हृदय को भी छू जाता है। प्रेम की सच्ची भावना और उस पर सजी भव्यता, यही है एक लक्ज़री वेडिंग की असली पहचान।

हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक का प्रकाशन

महालेखाकार ने अप्रैल 2025 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में संयुक्त अर्धवार्षिक हिंदी ई-गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक का लोकार्पण किया। समिति के समक्ष पत्रिका का ई-रूपांतरण प्रस्तुत किया गया।

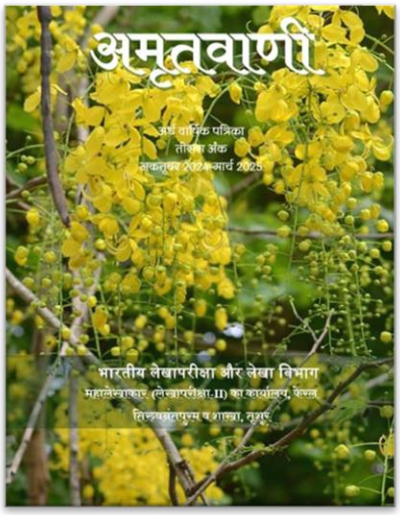

https://heyzine.com/flip-book/e2effba083.html

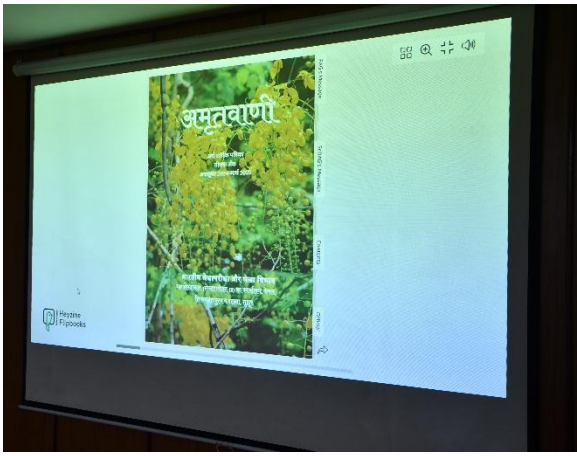
अमृतवाणी

स्वतंत्रता दिवस

भारत का स्वतंत्रता दिवस हमारे देश का सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व है । प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को हम स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं, क्योंकि इसी दिन सन् 1947 को भारत को अंग्रेज़ी शासन से आज़ादी मिली थी । यह दिन न केवल हमारी आज़ादी का प्रतीक है, बल्कि उन असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का स्मरण भी कराता है जिन्होंने अपना सर्वस्व देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया । स्वतंत्रता प्राप्ति के पीछे अनगिनत वीरों का संघर्ष और बलिदान निहित है । महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, राजगुरु, सुखदेव और अनेकानेक महान क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें स्वतंत्रता दिलाई। उनका सपना था कि भारत एक स्वतंत्र, समृद्ध और प्रगतिशील राष्ट्र बने ।

स्वतंत्रता दिवस भारतवासियों के लिए गर्व और गौरव का प्रतीक है । यह दिन हमें स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग और बलिदान की याद दिलाकर यह प्रेरणा देता है कि हम अपने राष्ट्र को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाएँ और इसे सशक्त, समृद्ध तथा विकसित बनाएं । इस दिन पूरे देश में ध्वजारोहण करता है और राष्ट्रगान गाया जाता है । दिल्ली के लालकिले पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा तिरंगा फहराया जाता है और देश को संबोधित किया जाता है । विद्यालयों, महाविद्यालयों, सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थानों में भी यह पर्व बड़े उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया जाता है ।

इसी उपलक्ष्य में 15 अगस्त 2025 को हमारे देश का 79वाँ स्वतंत्रता दिवस महालेखाकारों (लेखापरीक्षा-I, लेखापरीक्षा-II तथा लेखा व हकदारी), केरल, तिरुवनंतपुरम के कार्यालयों द्वारा कार्यालय परिसर में संयुक्त रूप से हर्षोल्लास और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया । प्रातः 7:50 बजे समारोह की शुरुआत हुई । आदरणीय महालेखाकार श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आई ए एण्ड ए एस की उपस्थिति में माननीय महालेखाकार श्री विष्णुकांत पी बी, आई ए एण्ड ए एस द्वारा सम्मान गारद के निरीक्षण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ । तदुपरांत उनके द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और मनोरंजन क्लब के सदस्यों द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुत किया गया। उसके बाद उप महालेखाकार/ प्रशासन के स्वागत भाषण के साथ सार्वजनिक बैठक की शुरुआत हुई ।

महालेखाकार महोदया द्वारा स्वतंत्रता दिवस संदेश दिया गया तत्पश्चात मनोरंजन क्लब द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया । उप महालेखाकार (प्रशासन) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ स्वतंत्रता दिवस समारोह 2025 संपन्न हुआ। समारोह में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता सराहनीय रही।

महालेखाकार द्वारा ध्वजारोहण

मनोरंजन क्लब द्वारा देशभक्ति गीत

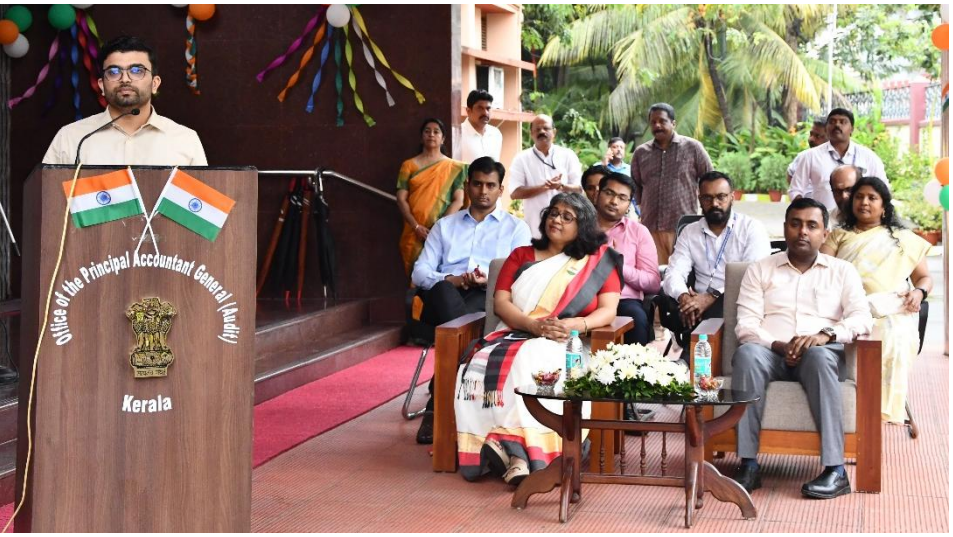

श्री डानिष मोहम्मद, उप
महालेखाकार द्वारा
स्वागत भाषण

महालेखाकार सुश्री अतूर्वा सिन्हा,
द्वारा स्वतंत्रता दिवस संदेश

धन्यवाद ज्ञापन-
श्री बाषा मोहम्मद बी,
उप महालेखाकार

दुनिया की 5 सबसे पुरानी जीवित भाषाएँ

श्री योगेंदर सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भाषाएँ संस्कृति, स्मृति और इतिहास की जीवित वाहक होती हैं। जहाँ कई भाषाएँ सदियों से लुप्त हो गई हैं, वहीं कुछ न केवल बची हुई हैं बल्कि वर्षों से विकसित भी हुई हैं। ये प्राचीन भाषाएँ हमें हमारे पूर्वजों के अतीत से जोड़ती हैं, बहुत पहले की सभ्यताओं की कहानियाँ बताती हैं और इसके साथ ही, वे हमें यह भी बताती हैं कि मनुष्य पहले कैसे सोचते, लिखते और संवाद करते थे।

इनमें से कुछ भाषाओं को शास्त्रीय माना जाता है, उनके साहित्यिक, धार्मिक या दार्शनिक पहलुओं को देखा जाता है। जबकि अन्य भाषाएँ सदियों पुरानी बोलियों का आधुनिक विकास हैं, जो आज घरों में बोली जाती हैं।

यहाँ दुनिया की पाँच सबसे पुरानी भाषाएँ हैं जो आज भी इस्तेमाल में हैं और आपको उनके बारे में जानकर आश्चर्य होगा।

पुरानी भाषाएँ और उनकी भूमिका

तमिल, संस्कृत, चीनी, हिब्रू और ग्रीक जैसी सबसे पुरानी बची हुई भाषाएँ आधुनिक समाजों को प्राचीन सभ्यताओं से जोड़ती हैं। वे सांस्कृतिक पहचान, ऐतिहासिक ज्ञान और धार्मिक परंपराओं को संरक्षित करती हैं। ये भाषाएँ समकालीन भाषण, साहित्य और दर्शन को प्रभावित करती हैं, जो पीढ़ियों से मानवता की बौद्धिक और आध्यात्मिक विरासत के लिए महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम करती हैं।

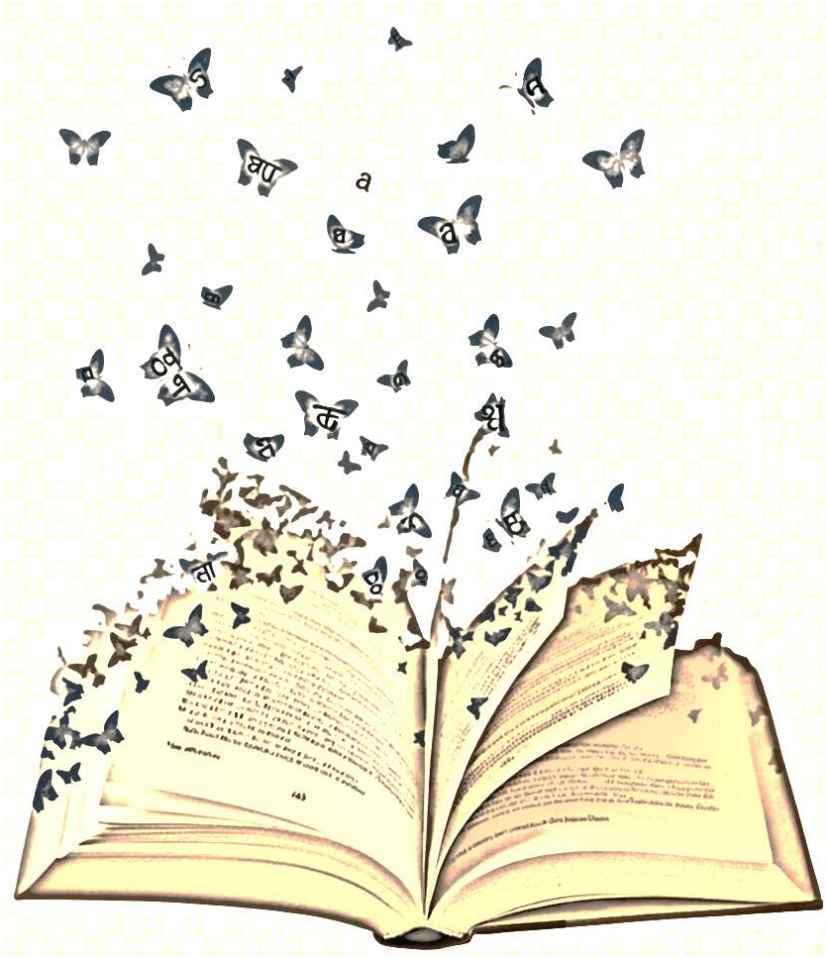

तमिल

तमिल, एक द्रविड़ भाषा है, जिसे दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे लंबे समय तक इस्तेमाल की जाने वाली शास्त्रीय भाषा माना जाता है । तमिल भाषा विश्व की सबसे प्राचीन जीवित भाषाओं में से एक है, जिसकी ऐतिहासिक विरासत हजारों वर्षों पुरानी है । यह भाषा मुख्यतः भारत के तमिलनाडु राज्य और पुदुचेरी केंद्र शासित क्षेत्र में बोली जाती है, साथ ही यह श्रीलंका, सिंगापुर, मलेशिया, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, और अन्य कई देशों में बसे तमिल प्रवासी समुदायों द्वारा भी प्रयुक्त की जाती है । इसकी जड़ें कम से कम 300 ईसा पूर्व से हैं, इसकी एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा है जो संगम साहित्य से शुरू हुई थी। इसकी प्राचीन कविताएँ और ग्रंथ, जैसे कि तिरुवल्लुवर द्वारा तिरुक्कुरल, गहन दार्शनिक, नैतिक और सामाजिक जानकारी देते हैं । तमिल भाषा की व्याकरण प्रणाली अत्यंत संगठित है और इसकी ध्वनियाँ विशिष्ट हैं, जो इसे अन्य भाषाओं से अलग करती हैं । इसकी लिपि, जो ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है, सौंदर्य और कलात्मकता का प्रतीक मानी जाती है । तमिल केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि यह लाखों लोगों की सांस्कृतिक पहचान, गर्व और परंपरा का प्रतीक भी है। भारत सरकार द्वारा इसे एक शास्त्रीय भाषा (Classical Language) का दर्जा भी प्रदान किया गया है, जो इसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई महत्ता को दर्शाता है । तमिल भाषा न केवल साहित्य और कला में, बल्कि धर्म, संगीत, सिनेमा और दैनिक जीवन में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

संस्कृत

संस्कृत भाषा विश्व की सबसे प्राचीन, वैज्ञानिक और समृद्ध भाषाओं में से एक है। संस्कृत को अक्सर हिंदू, बौद्ध और जैन धार्मिक ग्रंथों में इसके उपयोग के कारण "देवताओं की भाषा" कहा जाता है । लगभग 2000 ईसा पूर्व से, यह कई प्राचीन भारतीय महाकाव्यों और दार्शनिक ग्रंथों जैसे वेदों और उपनिषदों का माध्यम था। हालाँकि आज यह आम तौर पर नहीं बोली जाती है, लेकिन इसके आध्यात्मिक महत्व और सटीक व्याकरण के लिए इसका अध्ययन अभी भी किया जाता है जिसे चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में विद्वान पाणिनी ने अपनी रचना अष्टाध्यायी में संहिताबद्ध किया था, जो भाषा विज्ञान में एक आधारभूत ग्रंथ है।

यह भाषा न केवल भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत की आधारशिला है, बल्कि पूरे विश्व में इसकी बौद्धिक और आध्यात्मिक महत्ता को स्वीकार किया गया है । संस्कृत का साहित्य अत्यंत विशाल और विविध है, जिसमें वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृतियाँ, सूत्रग्रंथ, काव्य, नाटक और दर्शनशास्त्र शामिल हैं। ऋग्वेद, जो संस्कृत में रचित पहला ग्रंथ माना जाता है, विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ भी है। संस्कृत की ध्वनियाँ उच्चारण की शुद्धता और स्पष्टता के लिए जानी जाती हैं, और इसकी शब्दसंपदा अत्यंत व्यापक व गूढ़ अर्थों से युक्त है। यह भाषा केवल धार्मिक अनुष्ठानों और शास्त्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि चिकित्सा (आयुर्वेद), गणित, खगोलशास्त्र, वास्तुशास्त्र, राजनीति, नीतिशास्त्र आदि अनेक विषयों में इसका योगदान अतुलनीय है । आज भी संस्कृत भारत के कई विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में पढ़ाई जाती है, और इसके प्रचार-प्रसार के लिए अनेक संस्थान कार्यरत हैं। भारत सरकार द्वारा संस्कृत को संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त है, और यह भारत की 22 अनुसूचित भाषाओं में से एक है। संस्कृत न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारतीय ज्ञान, परंपरा, संस्कृति और अध्यात्म का जीता-जागता स्वरूप है ।

चीनी

चीनी दुनिया में सबसे पुरानी लगातार इस्तेमाल की जाने वाली लेखन प्रणालियों में से एक है। इसके लिखित इतिहास का शांग राजवंश के दौरान कम से कम 1250 ईसा पूर्व तक का पता लगाया जा सकता है, हालाँकि इसकी बोली जाने वाली जड़ें इससे भी पहले की हो सकती हैं। चीनी भाषा, जिसे मंदारिन (Mandarin) के नाम से भी जाना जाता है, विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और जनसंख्या के दृष्टिकोण से यह विश्व की सबसे बड़ी मातृभाषा है। यह भाषा चीन, ताइवान, सिंगापुर और विश्व के विभिन्न भागों में बसे चीनी समुदायों द्वारा बोली जाती है। चीनी भाषा की लिपि अद्वितीय और चित्रात्मक होती है, जिसे 'चाइनीज़ कैरेक्टर्स' या 'हांज़ी' कहा जाता है। यह लिपि ध्वन्यात्मक नहीं, बल्कि भावसूचक होती है, जिसमें प्रत्येक चिह्न एक शब्द या विचार का प्रतिनिधित्व करता है। चीनी भाषा की सबसे प्रमुख बोली 'मंदारिन' है, जो चीन की आधिकारिक भाषा है और संयुक्त राष्ट्र की भी एक आधिकारिक भाषा मानी जाती है। चीनी व्याकरण को अन्य भाषाओं की तुलना में सरल माना जाता है, क्योंकि इसमें लिंग, काल और वचन जैसे पारंपरिक व्याकरणिक भेद नहीं होते, परंतु इसकी उच्चारण प्रणाली (टोन सिस्टम) अत्यंत जटिल होती है, जिसमें एक ही शब्द का अर्थ स्वर (टोन) बदलने से भिन्न हो सकता है। चीनी साहित्य की परंपरा भी अत्यंत समृद्ध है, जिसमें कंफ्यूशियस, लाओत्से, और अन्य दार्शनिकों की शिक्षाएँ आज भी मानवता को दिशा प्रदान करती हैं। वर्तमान युग में चीनी भाषा का वैश्विक महत्व निरंतर बढ़ रहा है, क्योंकि चीन एक आर्थिक, राजनीतिक और तकनीकी महाशक्ति के रूप में उभर कर सामने आया है। इस प्रकार, चीनी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि एक प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और दर्शन की संवाहिका है। इसकी दीर्घायु और अनुकूलनशीलता ने इसे पूर्वी एशियाई इतिहास और संस्कृति का केंद्र बना दिया है।

ग्रीक

यूनानी भाषा, जिसे ग्रीक भाषा (Greek Language) कहा जाता है, विश्व की सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण भाषाओं में से एक है, जिसकी ऐतिहासिक परंपरा लगभग 3,000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है। यह समय के साथ आधुनिक ग्रीक में विकसित हुई, जिसे अब ग्रीस और साइप्रस में 13 मिलियन से अधिक लोग बोलते हैं। विज्ञान और दर्शन में कई अंग्रेजी शब्दों की जड़ें ग्रीक हैं। यह इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार की एक प्रमुख शाखा है और यूरोप की सांस्कृतिक, दार्शनिक तथा बौद्धिक परंपराओं की नींव रखने में इसका विशेष योगदान रहा है। प्राचीन यूनानी भाषा में प्लेटो, अरस्तू, होमर जैसे महान दार्शनिकों और साहित्यकारों ने ऐसे ग्रंथों की रचना की जो आज भी विश्व साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में अद्वितीय माने जाते हैं। "इलियड" और "ओडिसी" जैसे महाकाव्य इसी भाषा में रचे गए, जो न केवल साहित्यिक दृष्टि से बल्कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यूनानी भाषा की वर्णमाला, जो आज की कई यूरोपीय भाषाओं की आधारशिला बनी, विश्व की पहली वर्णमालाओं में से एक थी जिसमें स्वरों और व्यंजनों दोनों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया था। आधुनिक यूनानी भाषा, जिसे 'डिमोटिकी' कहा जाता है, यूरोपीय संघ की एक मान्यता प्राप्त भाषा भी है। यूनानी भाषा का प्रभाव विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और दर्शन जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, क्योंकि हजारों शब्द और अवधारणाएँ आधुनिक वैज्ञानिक शब्दावली का हिस्सा बन चुकी हैं। यह भाषा न केवल यूरोपीय बौद्धिक परंपरा की जननी रही है, बल्कि लोकतंत्र,

न्याय, नीतिशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र जैसे विचारों की आधारशिला भी इसी ने रखी है।

हिब्रू

हिब्रू प्राचीन इजरालियों के बीच एक रोज़मर्रा की बोली जाने वाली भाषा थी, और इसका उपयोग 3,000 साल से भी ज़्यादा पुराना है। 200 ई. के आसपास नियमित उपयोग से बाहर होने के बाद, यह यहूदी धार्मिक प्रथाओं के लिए एक औपचारिक भाषा के रूप में बची रही।

यह भाषा बाइबिल की मूल भाषा के रूप में जानी जाती है और इसे "पवित्र भाषा" (लाशोन हाकोदश) के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। हिब्रू भाषा की सबसे प्राचीन लिपिबद्ध सामग्री लगभग 3000 वर्ष पुरानी मानी जाती है, जिसमें धार्मिक ग्रंथों, कविताओं और ऐतिहासिक वृत्तांतों का समावेश है। प्राचीन काल में यह भाषा व्यापक रूप से बोली जाती थी, परंतु समय के साथ हिब्रू एक मृत भाषा के रूप में केवल धार्मिक अनुष्ठानों और यहूदी धर्मशास्त्र में सीमित हो गई थी। परंतु 19वीं और 20वीं शताब्दी में यह एक अद्वितीय भाषाई पुनरुत्थान का उदाहरण बनी, जब इसे आधुनिक रूप में पुनर्जीवित किया गया। इस पुनर्जागरण में एलिएज़र बेन-यहूदा नामक विद्वान की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, जिन्होंने हिब्रू को एक जीवंत आधुनिक भाषा के रूप में पुनर्स्थापित किया। आधुनिक हिब्रू अब शिक्षा, प्रशासन, मीडिया, तकनीक और साहित्य में पूर्ण रूप से प्रयोग की जाती है। इसकी लिपि दायें से बाएं लिखी जाती है और इसकी वर्णमाला में स्वर नहीं होते, जिन्हें विशेष बिंदुओं और चिह्नों द्वारा दर्शाया जाता है। हिब्रू भाषा न केवल एक संवाद का माध्यम है, बल्कि यह यहूदी पहचान, परंपरा और धार्मिक चेतना का प्रतीक भी है। आज यह भाषा इज़राइल में लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है और दुनिया भर में यहूदी समुदायों के बीच एक सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करती है। हिब्रू का इतिहास, पुनरुत्थान और वर्तमान स्थिति इसे विश्व की सबसे विशिष्ट और प्रेरणादायक भाषाओं में से एक बनाते हैं। आज, यह मानव इतिहास में बड़े पैमाने पर सफल भाषा पुनरुद्धार का एकमात्र उदाहरण है और अब यह इज़राइल की आधिकारिक भाषा है।

संचार के माध्यम के रूप में भाषा

भाषा संचार का एक सशक्त माध्यम है जो मनुष्यों को विचारों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने में सक्षम बनाती है। यह व्यक्तियों, संस्कृतियों और पीढ़ियों को जोड़ती है और समझ व सहयोग की नींव का काम करती है। चाहे मौखिक हो, लिखित हो या सांकेतिक, भाषा अर्थ व्यक्त करने और संबंध बनाने में मदद करती है। यह शिक्षा, व्यवसाय और दैनिक बातचीत में आवश्यक है, और लोगों के सोचने और दुनिया को देखने के तरीके को आकार देती है। हज़ारों भाषाओं में, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी संरचना और शैली है, मूल उद्देश्य एक ही है – संचार। जैसे-जैसे तकनीक विकसित होती है, भाषा भी बदलती रहती है, लोगों के बीच की दूरियों को पाटती है और अभूतपूर्व वैश्विक संपर्क को बढ़ावा देती है।

प्राचीन भाषाओं ने आज की भाषाओं को कैसे आकार दिया

लैटिन, ग्रीक और संस्कृत जैसी प्राचीन भाषाओं ने कई आधुनिक भाषाओं की नींव रखी। उन्होंने यूरोप, एशिया और उसके बाहर शब्दावली, व्याकरण और लेखन प्रणालियों को प्रभावित किया। व्यापार और धर्म के माध्यम से, ये भाषाएँ विकसित हुईं और स्थानीय बोलियों के साथ मिलकर आज दुनिया में दिखाई देने वाली भाषाई विविधता को आकार दिया।

राजभाषा विभाग की 50वीं वर्षगांठ

शासन-प्रशासन में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे राजभाषा विभाग ने इस वर्ष अपनी 50वीं वर्षगांठ मनाई। यह विभाग केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत आता है और शासन से संबंधित भाषा नीतियों के प्रचार और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी स्थापना सन् 1975 में सरकारी कामकाज में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। विभाग का प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत में शासन इस प्रकार संचालित हो कि देश की भाषाई विविधता प्रतिबिंबित हो । इसलिए, यह विभाग भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर प्रशासनिक कार्यों का केंद्रीय अंग बनाने की दिशा में कार्य करता है।

राजभाषा के बारे में

"राजभाषा" शब्द का तात्पर्य सरकार द्वारा प्रशासनिक उद्देश्यों, संचार और सार्वजनिक दस्तावेज़ीकरण के लिए उपयोग की जाने वाली भाषा(ओं) से है।

❖ राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान:

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 343 हिंदी को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में नामोद्दिष्ट करता है।

- राजभाषा अधिनियम, 1963 कार्यालयीन प्रयोजनों के लिए हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी के निरंतर प्रयोग की अनुमति देता है।

- अनुच्छेद 345: देश की भाषाई विविधता को दर्शाते हुए, अनुच्छेद 345 में प्रावधान है कि भारत में राज्य आधिकारिक प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए अपनी क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं।

- अनुच्छेद 348 में निर्दिष्ट किया गया है कि सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालयों की आधिकारिक कार्यवाही और संसद में प्रस्तुत विधेयकों के लिए प्रयुक्त भाषा अंग्रेजी

होगी, जब तक कि संसद अन्यथा निर्धारित न करे।

❖ **भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत की राजभाषाओं की सूची दी गई है।**

इसमें निम्नलिखित 22 भाषाएँ शामिल हैं: असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी।

हालाँकि, किसी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए कोई स्थापित मानदंड नहीं हैं।

हिंदी की भूमिका: जैसा कि संविधान में निर्दिष्ट है, हिंदी केंद्र सरकार की प्राथमिक आधिकारिक भाषा है।

देश में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में सरकारी पहल

- **"एक भारत, श्रेष्ठ भारत":** इस पहल का उद्देश्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच संपर्क को प्रोत्साहित करके सांस्कृतिक और भाषाई एकता को बढ़ावा देना है।

- **"भाषा संगम":** भाषा के माध्यम से एकता को मजबूत करने के लिए एक मंच, जहाँ छात्रों को संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में आमतौर पर प्रयुक्त वाक्यांश सिखाए जाते हैं।

- **"हिंदी शब्दसिंधु":** हिंदी में क्षेत्रीय शब्दों को शामिल करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक शब्दकोश, जो आम तौर पर बोले जाने वाले शब्दों को, चाहे उनका मूल कुछ भी हो, शामिल करके इसे अधिक लचीला और समावेशी बनाता है।

- **भारतीय भाषा अनुभाग**: इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राज्य और केंद्रीय प्रशासन दोनों भारतीय भाषाओं में कार्य करें तथा शासन में क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को समर्थन प्रदान करें।

- **नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020:** एनईपी भाषा विकास को बढ़ावा देने और भारत की सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने के लिए कक्षा 5 और कक्षा 8 तक मातृभाषा शिक्षा के महत्व पर जोर देती है।

- **शास्त्रीय भाषाएँ**: 11 शास्त्रीय भाषाओं - संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, ओडिया, मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली- को दे रही मान्यता भारत की समृद्ध भाषाई विरासत को दर्शाती है।

भारतीय भाषा अनुभाग

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह ने 6 जून 2025 को नई दिल्ली में भारतीय भाषा अनुभाग का शुभारंभ किया। इस अवसर पर केंद्रीय गृह सचिव और राजभाषा सचिव सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस पहल का उद्देश्य आधिकारिक संचार में विदेशी भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी, के प्रभाव को कम करना है।

अपने संबोधन में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना के साथ ही राजभाषा विभाग अब एक संपूर्ण विभाग बन गया है। यह प्रशासन को विदेशी भाषाओं के प्रभाव से मुक्त करने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि हमारी क्षमता का पूर्ण दोहन तभी हो सकता है जब हमारा चिंतन, विश्लेषण और निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ हमारी मातृभाषा में हों। देश की सभी स्थानीय भाषाओं को सशक्त बनाकर ही हम भारत को उसके शाश्वत गौरवशाली स्थान पर पहुँचा सकते हैं। हमारी प्रत्येक भाषा अन्य भाषाओं से पूर्णतः जुड़ी हुई है और सभी भाषाओं का विकास एक-दूसरे के बिना संभव नहीं है। भारतीय भाषाएँ हमारी संस्कृति की आत्मा हैं और हमारी संस्कृति भारत की आत्मा है। तकनीक का उपयोग सभी भाषाओं की भावना, समृद्धि और संवेदनशीलता को कम किए बिना किया जाना चाहिए। अपने भाषण को विराम देते हुए मंत्री जी ने आत्मविश्वास जताया कि यह अनुभाग भारत की भाषाई विविधता को समाहित करते हुए सभी भाषाओं को एक सशक्त और संगठित मंच प्रदान करेगा। स्थानीय भाषाओं को सशक्त बनाकर ही हम भारत को विश्व में एक प्रतिष्ठित और सम्मानजनक स्थान दिला सकते हैं।

तकनीकी एकीकरण

भारतीय भाषा अनुभाग एक सार्वभौमिक अनुवाद प्रणाली विकसित करने के लिए उन्नत कंप्यूटिंग परिनियोजन केंद्र (सी-डैक) के साथ सहयोग करेगा । यह प्रणाली विभिन्न भाषाओं के बीच निर्बाध संचार को संभव बनाएगी । उदाहरण के लिए, किसी राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा तमिल में लिखे गए पत्र का केंद्रीय मंत्रियों के लिए अनुवाद किया जा सकता है, जिससे संचार में स्पष्टता और सुगमता सुनिश्चित होगी । सांस्कृतिक पुनरुत्थान को भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए आवश्यक माना जाता है ।

पहल के उद्देश्य

भारतीय भाषाओं को राष्ट्र की संस्कृति की आत्मा माना जाता है । भारतीय भाषा अनुभाग का उद्देश्य स्थानीय भाषाओं को प्राथमिकता देकर नागरिकों और उनकी सांस्कृतिक पहचान के बीच गहरे संबंध को प्रोत्साहित करना है । इस भारतीय भाषा अनुभाग से शासन में एक अधिक समावेशी वातावरण निर्मित होने की आशा है । इसका उद्देश्य नागरिकों को सशक्त बनाना है ताकि वे अपनी मातृभाषा में सरकार के साथ संवाद कर सकें । इस पहल से लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी और प्रतिनिधित्व में वृद्धि होने की संभावना है ।

स्वर्ण जयंती समारोह-भारत मंडपम, नई दिल्ली

26 जून 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में राजभाषा विभाग की स्वर्ण जयंती का भव्य समारोह संपन्न हुआ । केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने 'स्वर्ण जयंती समारोह' में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे और सभा को संबोधित किया । इस अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री बंदी संजय कुमार, संसदीय

"कोई भी देश अपनी भाषा के बिना अपनी संस्कृति, साहित्य, इतिहास और सामाजिक मूल्यों को संरक्षित नहीं कर सकता। देश को अपनी संस्कृति के आधार पर स्वाभिमान के साथ आगे बढ़ने के लिए, उसका शासन उसकी अपनी भाषाओं में संचालित होना चाहिए । राजभाषा विभाग इसी महान उद्देश्य के साथ शुरू किया गया था। 50 वर्ष की यह यात्रा हम सभी ने सामूहिक

राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब, राज्यसभा सांसद श्री सुधांशु त्रिवेदी और राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती अंशुली आर्या सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

अपने संबोधन में, केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि राजभाषा विभाग की स्थापना का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि देश का शासन उसके नागरिकों की भाषा में चले और प्रशासन में भारतीय भाषाओं का प्रयोग राष्ट्र के स्वाभिमान को जागृत करे । उनके भाषण के मुख्य अंश इस प्रकार थे:

रूप से संघर्ष, समर्पण और दृढ़ संकल्प की नींव पर पूरी की है । जब तक व्यक्ति अपनी भाषा पर गर्व नहीं करेगा, अपनी भाषा में अभिव्यक्ति, चिंतन, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता विकसित नहीं करेगा, तब तक हम गुलामी की मानसिकता से मुक्त नहीं हो सकते । भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि राष्ट्र की आत्मा है। आने वाले दिनों में हमें सभी भारतीय भाषाओं और विशेषकर राजभाषा के लिए ऐसे ही प्रयास करने होंगे । पिछले 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी जी ने "एक

भारत, श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम की शुरुआत की है और इस पहल के अंतर्गत काशी-तमिल संगमम, काशी-तेलुगु संगमम, सौराष्ट्र-तमिल संगमम, शाश्वत मिथिला महोत्सव और भाषा संगम जैसे आयोजनों ने देश की एकता को मज़बूत करने के लिए एक बहुत ही प्रभावी मंच प्रदान किया है। आज भाषा संगम पहल के तहत प्रत्येक स्कूल में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में 100 सामान्य रूप से प्रयुक्त किए जान वाले वाक्यों को छात्रों को सिखाने का कार्यक्रम चलाया जा रहा है । राजभाषा विभाग ने "हिंदी शब्दसिंधु" का निर्माण किया है, जो राजभाषा को सर्वमान्य, लचीला और व्यापक बनाने का एक बड़ा प्रयास है। किसी भी भाषा को समृद्ध बनाने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए, और आम बोलचाल के शब्द-चाहे उनका मूल कहीं भी हो-एक बार हिंदी शब्दसिंधु में शामिल हो जाने पर, उन्हें भविष्य में हिंदी शब्दों के रूप में मान्यता मिलेगी । हिंदी शब्दसिंधु न केवल हिंदी को अधिक लचीला और समृद्ध बनाएगा, बल्कि उसे अन्य भारतीय भाषाओं से भी जोड़ेगा । इसी वर्ष भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना भी की गई है जो प्रत्येक राज्य को यह सुनिश्चित करने में सहायता करेगा कि राज्यों और भारत सरकार का प्रशासन भारतीय भाषाओं में चले । हमारे देश में 12 भारतीय भाषाओं में तकनीकी शिक्षा शुरू की गई है । मध्य प्रदेश ने हिंदी में चिकित्सा शिक्षा शुरू की है, जिसका पूरा पाठ्यक्रम तैयार किया गया है और आने वाले दिनों में अन्य राज्य भी बच्चों की सुविधा के लिए अपनी संपूर्ण चिकित्सा शिक्षा का पाठ्यक्रम अपनी भाषाओं में तैयार करेंगे। सभी राज्यों से आग्रह है कि वे अपनी राज्य भाषाओं में इंजीनियरिंग और चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था करें । आज भारत में संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली के रूप में 11 शास्त्रीय भाषाएँ उपलब्ध हैं। पूरी दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ 11 शास्त्रीय भाषाएँ हों । 2020 में संस्कृत के लिए तीन केंद्रीय विद्यालय स्थापित किए गए और शोध एवं अनुवाद के लिए केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान की स्थापना की गई । कोविड-19 के दौरान, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान और केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा ई-प्रशिक्षण के माध्यम से हिंदी भाषा, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि और हिंदी अनुवाद का प्रशिक्षण शुरू किया गया था, जिसे अब नियमित करने का निर्णय लिया गया है।

राजभाषा विभाग ने यह निर्णय लिया है कि आने वाले दिनों में हम भारतीय भाषा अनुभाग के माध्यम से भारतीय भाषाओं को किशोरों और युवाओं की भाषा बनाएंगे । हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी भाषाएँ भारत को जोड़ने का सशक्त माध्यम बनें, तोड़ने का नहीं । प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आज जो नींव रखी जा रही है, वह 2047 में एक विकसित और महान भारत का निर्माण करेगी । इसके तहत भारतीय भाषाओं का विकास और संवर्धन किया जाएगा और साथ ही उनकी उपयोगिता भी बढ़ाई जाएगी।"

लोगो प्रतियोगिता के अलावा वॉकेथॉन रन-फ़ॉर-फ़न, दौड़ प्रतियोगिता, जिसमें विभागीय कर्मचारियों एवं आम लोगों ने भाग लिया था, के विजेताओं को भी पुरस्कृत किया गया। आयोजकों ने साझा रूप से 'सर्वश्रेष्ठ धावक', 'सबसे उत्साही भागीदार' आदि को पुरस्कृत किया।इस अवसर पर "सप्त सिंधु शब्द कोश" नामक बहुभाषाई शब्द कोश जिसमें (13 भारतीय भाषाओं में) में राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए शब्दों का समावेश है, का गृह मंत्री अमित शाह ने विधिवत लोकार्पण किया।

स्वर्ण जयंती समारोह, हैदराबाद

– दक्षिण संवाद

26 जून 2025 को नई दिल्ली में आयोजित भव्य उद्घाटन समारोह के बाद, श्रृंखला का अगला प्रमुख समारोह - "दक्षिण संवाद" - शुक्रवार, 11 जुलाई 2025 को जीएमसी बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गाचीबोवली, हैदराबाद में आयोजित किया गया।

भारत को सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के आधार पर क, ख और ग क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में सहयोग के लिए, देश भर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ (नाराकास) स्थापित की गई हैं।

"दक्षिण संवाद" कार्यक्रम एक उत्सव से कहीं बढ़कर था - यह राजभाषा कार्यान्वयन में पाँच दशकों की प्रगति का सम्मान और देश की भाषाई एकता को मज़बूत करने में दक्षिण भारत की सक्रिय भूमिका का सम्मान है। इस आयोजन का मुख्य विषय भारतीय भाषाओं के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना था, जहाँ हिंदी समन्वय के माध्यम के रूप में कार्य करती है – प्रतिस्थापन के रूप में नहीं - बल्कि भारत के समृद्ध बहुभाषी ताने-बाने में एक सेतु के रूप में।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री, श्री जी किशन रेड्डी थे। इस कार्यक्रम के अन्य विशिष्ट अतिथि थे श्री हरिवंश, माननीय राज्यसभा के उपसभापति, श्री नित्यानंद राय, माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री पवन कल्याण, माननीय उपमुख्यमंत्री, आंध्र प्रदेश। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और पुदुचेरी सहित पूरे दक्षिण भारत से वरिष्ठ अधिकारी, विद्वान और भाषा प्रेमी इस भव्य अवसर पर बड़ी संख्या में शामिल हुए ।समारोह के एक भाग के रूप में, स्वर्ण जयंती वर्ष के लिए आयोजित खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया, जो भाषाई संवर्धन और सांस्कृतिक सहभागिता दोनों के प्रति विभाग के समर्पण को दर्शाता है।

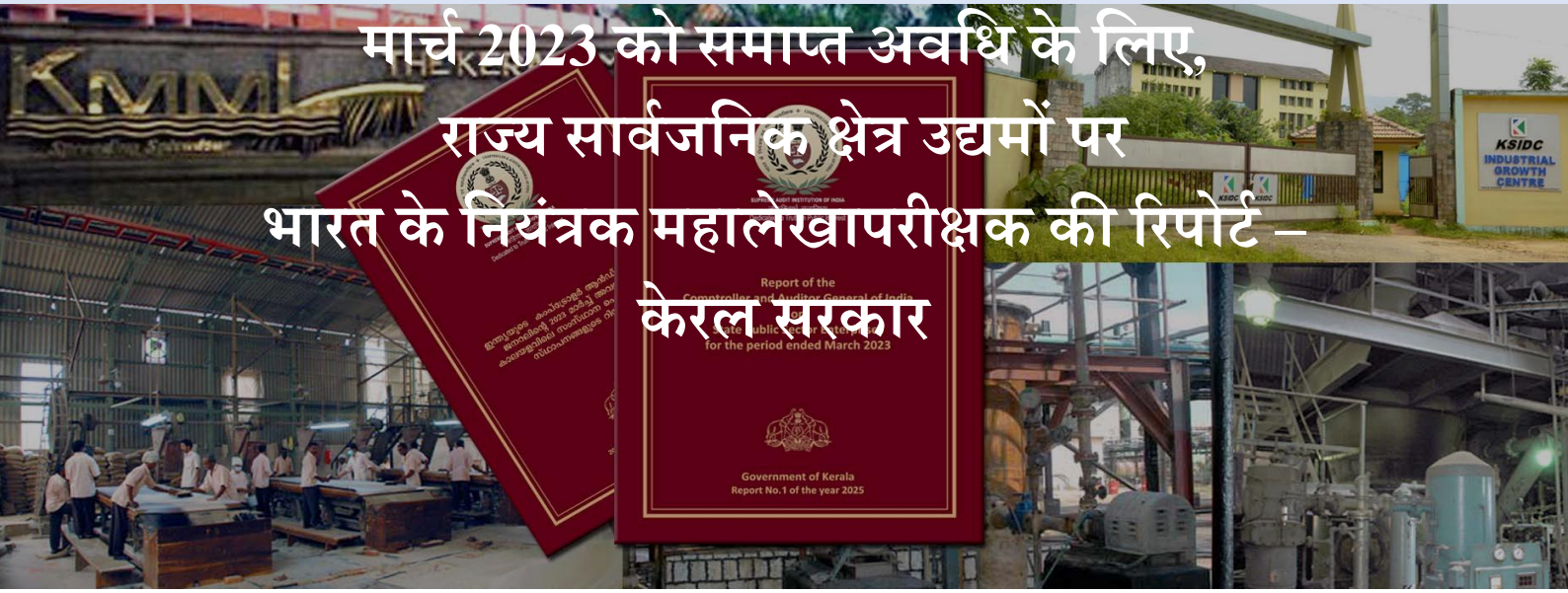

मार्च 2023 को समाप्त अवधि के लिए, राज्य सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों पर भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट – केरल सरकार

वर्ष 2025 की रिपोर्ट सं.1

विहंगावलोकन

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की यह लेखापरीक्षा रिपोर्ट, भारत के संविधान के अनुच्छेद 151(2) तथा समय-समय पर यथा संशोधित नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 19 A के तहत केरल के राज्यपाल को प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गयी।

इस रिपोर्ट में सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों के वित्तीय निष्पादन, नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की निरीक्षण भूमिका, कॉरपरेट शासन प्रणाली, कॉरपरेट सामाजिक दायित्व का संग्रह प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए सरकारी कंपनियों तथा सांविधिक निगमों की अनुपालन लेखापरीक्षाओं के महत्वपूर्ण परिणाम भी प्रस्तुत किए गए हैं।

इस रिपोर्ट में समीक्षा किए राज्य सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों के लेखों में अक्तूबर 2022 से सितंबर 2023 तक प्राप्त वार्षिक लेखे सम्मिलित हैं। उन सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों के संबंध में जहां से वर्ष 2022-23 के लिए लेखे प्राप्त नहीं हुए थे, प्राप्त नवीनतम अंतिम लेखाओं के आंकडे ग्रहित किए गए हैं।

इस रिपोर्ट में उल्लिखित अनुपालन लेखापरीक्षा के दृष्टांत, वे हैं जो वर्ष 2022-2023 के दौरान लेखापरीक्षा दौरान ध्यान में आए, और वे भी है जो पूर्व वर्षों में ध्यान में आए तो थे लेकिन पिछली लेखापरीक्षा रिपोर्टों में समाविष्ट नहीं किए जा सके। जहाँ आवश्यक लगे, वर्ष 2022-2023 के बाद की अवधि के मामले भी शामिल किए हैं। भारत के नियंत्रक - महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षण मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा आयोजित की गयी थी।

सरकारी कंपनियों की लेखापरीक्षा कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 139 तथा 143 द्वारा शासित है। सरकारी कंपनियों के लेखों की लेखापरीक्षा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा नियुक्त सांविधिक लेखापरीक्षकों द्वारा की जाती है। ये लेखे नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा अनुपूरक लेखापरीक्षा के भी अधीन हैं। सांविधिक निगमों की लेखापरीक्षा उनसे संबंधित विधानों द्वारा शासित है।

अध्याय I राज्य सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों के वित्तीय निष्पादन का संक्षेप

लेखापरीक्षा कवरेज

31 मार्च 2023 की स्थिति के अनुसार भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा कार्यक्षेत्र के अधीन 149 राज्य सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम हैं। यह रिपोर्ट 131 कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों की वित्तीय स्थिति और निष्पादन के विश्लेषण से संबंधित है। इस रिपोर्ट में उन अठारह सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों को शामिल नहीं किया गया है जो परिसमापन के अधीन हैं।

राज्य सरकार द्वारा निवेश

31 मार्च 2023 की स्थिति के अनुसार 131 कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों में केरल सरकार द्वारा कुल निवेश ₹22,318.09 करोड था जिसमें ₹10,015.46 करोड़ की इक्विटी शेयर पूंजी और ₹12,302.63 करोड़ के दीर्घकालिक ऋण शामिल है।

सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों का निष्पादन

131 कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों में से, सितंबर 2023 तक प्रस्तुत उनके अंतिम लेखों के अनुसार 58 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों ने ₹1,368.72 करोड का लाभ कमाया जबकि 66 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों ने ₹1,873.89 करोड़ का घाटा उठाया। चार सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों को कोई लाभ/ हानि नहीं हुई। तीन सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों ने अभी तक सीएजी की समीक्षा के लिए अपना पहला लेखा प्रस्तुत नहीं किया है।

निवल मूल्य/ संचित घाटा

सत्तर कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों का कुल संचित घाटा उनके नवीनतम अंतिम खातों के अनुसार ₹18,026.49 करोड़ था। 77 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों में से 44 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों का निवल मूल्य संचित घाटा द्वारा पूरी तरह नष्ट हो गया था और उनका निवल मूल्य नकारात्मक था। इन सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों का निवल मूल्य ₹5,954.33 करोड़ के इक्विटी निवेश के पक्ष में (-) ₹11,227.04 करोड़ था। अपने अंतिम लेखों के अनुसार, जिन 44 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम की पूंजी नष्ट हो गयी थी, उनमें से 40 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों ने ₹1,684.48 करोड़ का घाटा रिपोर्ट की, तीन सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों को ₹736.97 करोड़ का लाभ हुआ था और एक सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम ने न कोई लाभ-न घाटे की सूचना दी है।

सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों द्वारा लाभांश का भुगतान

सात सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों ने वर्ष 2022-23 के दौरान प्रस्तुत अपने नवीनतम अंतिम लेखों के अनुसार ₹35.83 करोड़ का लाभांश घोषित किया। लाभ कमाने वाले 58 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों में ₹6,322.26 करोड़ के कुल निवेश पर लाभांश के रूप में प्रतिफल 0.57 प्रतिशत था। लाभ कमाने वाले 55 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों ने लाभांश घोषित नहीं किया था या केरल सरकार द्वारा निर्धारित प्रतिशत से कम लाभांश घोषित किया था और केरल सरकार को लाभांश के भुगतान में ₹873.18 करोड़ की कमी आई थी।

अध्याय II नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के पर्यवेक्षण भूमिका

131 कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में से, केवल सोलह सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों (एक सांविधिक निगम सहित) ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए अपने लेखे निर्धारित अवधि के भीतर लेखापरीक्षा हेतु प्रस्तुत किए, जोकि कुल कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों की संख्या का मात्र 12.21

प्रतिशत है । 103 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों ने कुल 179 बकाया लेखे (2011-12 से 2021-22 की पूर्व अवधियों से संबंधित) सीएजी द्वारा लेखापरीक्षा हेतु प्रस्तुत किए ।

दो वैधानिक निगमों में से, जहाँ नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक एकमात्र लेखापरीक्षक है, दि. 30 सितंबर 2023 तक की स्थिति के अनुसार केरला स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कारपरेशन की लेखापरीक्षा सात वर्षों (2016-17 से 2022-23) की अवधि के लिए लंबित हे ।

115 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों द्वारा लेखों को प्रस्तुत करने में देरी के आयु-वार विश्लेषण से पता चला कि 30 सितंबर 2023 तक की स्थिति के अनुसार 270 खातों (वित्त वर्ष 2022-23 और उससे पहले के लिए) का प्रस्तुतीकरण अभी भी लंबित था ।

इसके अलावा, छह साल और उससे अधिक की देरी (यानी 2017-18 से आगे) के लिए, सात सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों से 51 लेखे लंबित थे; तीन से पांच साल (यानी 2018-19 से 2022-23) के लिए 29 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों से 108 लेखे लंबित थे, दो साल (यानी 2021-22 और 2022-23) के लिए 32 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों से 64 लेखे लंबित थे ।

अध्याय III कॉर्पोरेट प्रशासन

निदेशक मंडल

131 कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में से, 97 कंपनियों और चार सांविधिक निगमों ने कॉर्पोरेट प्रशासन से संबंधित विवरण (31 दिसंबर 2023 तक) प्रस्तुत किए थे, जिन पर विश्लेषण हेतु विचार किया गया । 97 सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में से, 20 ने वर्ष 2022-23 के दौरान निदेशक मंडल की अनिवार्य चार बैठकें आयोजित नहीं कीं । मानदंडों को पूरा करने वाली 17 सार्वजनिक कंपनियों में से ग्यारह ने निदेशक मंडल में स्वतंत्र निदेशकों की नियुक्ति नहीं की थी ।

लेखापरीक्षा समिति

101 सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में से 35 (दो सांविधिक निगमों सहित) में लेखापरीक्षा समिति का गठन किया गया । 35 सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में से, 11 सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की लेखापरीक्षा समिति ने आंतरिक वित्तीय नियंत्रण प्रणालियों का मूल्यांकन नहीं किया, 14 सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों ने सांविधिक लेखापरीक्षकों के निष्पादन और लेखापरीक्षा प्रक्रिया की प्रभाविता की समीक्षा और निगरानी नहीं की, सात सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों ने वित्तीय विवरणों और लेखापरीक्षकों की रिपोर्टों की समीक्षा नहीं की, 14 सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों ने नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के निष्कर्षों की समीक्षा नहीं की और निमलेप द्वारा जारी प्रबंधन पत्रों की जाँच नहीं की, और 24 सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों ने चिंता के विषयों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए लेखापरीक्षा शुरू करने से पहले और लेखापरीक्षा पूरी होने के बाद सांविधिक लेखापरीक्षकों के साथ लेखापरीक्षा की प्रकृति और दायरे पर चर्चा नहीं की ।

अध्याय IV कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

लेखापरीक्षा में 14 कंपनियों द्वारा की गई कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) गतिविधियों की समीक्षा की गई, जो कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135 की उप धारा (1) में निर्दिष्ट मानदंडों में से कम से कम एक को पूरा करती थीं । यह पाया

गया कि 13 कंपनियों ने सीएसआर समितियों का गठन किया था और सभी 14 कंपनियों ने अपने-अपने बोर्ड द्वारा अनुमोदित सीएसआर नीति तैयार की थी। नौ कंपनियों के पास अपने रिपोर्टिंग वर्षों के लिए वार्षिक सीएसआर योजना नहीं थी। उपयोग के संबंध में, चार कंपनियों ने निर्धारित राशि (₹5.90 करोड़) खर्च की और तीन कंपनियों ने निर्धारित राशि (₹2.77 करोड़) से अधिक खर्च किया। चार कंपनियों ने ₹1.54 करोड़ की सीमा तक सीएसआर का भुगतान नहीं किया/कम किया।

स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण गतिविधियां (क्रमशः 37 प्रतिशत और 36 प्रतिशत) मुख्य फोकस क्षेत्र थे और इन्हें अधिकतम वित्त पोषण प्राप्त हुआ।

अध्याय V अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ

दी केरला मिनरल्स एंड मेटल्स लिमिटेड में वस्तुओं के प्रापण के लिए निविदा प्रक्रिया

निदेशक मंडल ने (2016) नई क्रय प्रक्रिया (एनपीपी) को मंजूरी दी, जिसमें केरल सरकार के स्टोर परचेस मैनुअल (एसपीएम) से विचलन शामिल थे। लेखापरीक्षा में निविदा प्रक्रिया में हेराफेरी के मामले पाए गए। बोली मूल्यांकन प्रक्रिया कई मामलों में दोषपूर्ण थी, जिसमें पूर्व-योग्यता मानदंडों में संशोधन, निविदा नियमों और शर्तों में विसंगतियां और कमियां, और एसपीएम और एनपीपी के प्रासंगिक प्रावधानों का अनुपालन न करना शामिल था, जिसके परिणामस्वरूप अयोग्य बोली लगाने वालों को संविदा दे दी गयी। निविदा को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया भी ऑर्डर मात्रा के विभाजन, आपूर्तिकर्ताओं के साथ औपचारिक समझौते के अभाव आदि के कई उदाहरणों से प्रभावित थी, जिसके कारण आपूर्तिकर्ताओं द्वारा संविदा के उल्लंघन के कारण हुए नुकसान की भरपाई कंपनी द्वारा नहीं की जा सकी।

लेखापरीक्षा द्वारा निविदा प्रक्रिया की समीक्षा में निम्नलिखित कमियाँ सामने आईं:

- ₹19.59 करोड़ की लागत वाली 14 सामग्रियों का प्रापण निविदा आमंत्रित किए बिना किया गया, जिससे प्रापण प्रक्रिया में मितव्ययिता, दक्षता, पारदर्शिता और निष्पक्षता के सिद्धांतों का उल्लंघन हुआ।
- बोली लगाने वालों के बीच ऑर्डर की मात्रा का बँटवारा हुआ, जिससे पक्षपात हुआ, खरीद में पारदर्शिता और निष्पक्षता धुंधली हुई, और कैल्साइन्ड पेट्रोलियम कोक, सोडियम सिलिकेट और पेटकोक की खरीद पर ₹4.87 करोड़ का अतिरिक्त व्यय हुआ।
- वर्ष 2020 में केरल सरकार से दो प्री-हीटर्स की संशोधित लागत की मंजूरी और सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम समिति की सिफारिश की तारीख (जून 2018) से पाँच साल बीत जाने के बावजूद, कंपनी ने आज तक (अप्रैल 2024) टिकल प्री-हीटर्स की खरीद नहीं की। इस अत्यधिक देरी के कारण कंपनी को 9,504 मेट्रिक टन एलपीजी की लागत में बचत से वंचित होना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2013-23 के दौरान ₹50.40 करोड़ का परिहार्य व्यय हुआ।
- चूँकि प्रतिस्पर्धा और उचित मूल्य निर्धारण सुनिश्चित करने के लिए खुली ई-निविदा आमंत्रित नहीं की गई थी, कंपनी ने प्रापण में मितव्ययिता सुनिश्चित नहीं की और रसायनों की खरीद पर ₹21.47 करोड़ का अतिरिक्त व्यय किया, जो कंपनी द्वारा

भुगतान की गई कीमत से कम कीमत पर आपूर्ति के लिए उपलब्ध थे।

- कंपनी ने प्रापण से पहले न तो बाजार की जानकारी एकत्र की और न ही राहत के लिए पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस नियामक बोर्ड से संपर्क किया। परिणामस्वरूप, कंपनी ने अधिक कीमतों पर एलएनजी का प्रापण किया और नामित खरीद पर ₹1.70 करोड़ का अतिरिक्त व्यय किया।

केरला स्टेट इंडस्ट्रियल डिवलेपमेंट कारपरेशन लिमिटेड की गैर-बैंकिंग वित्त पोषण गतिविधियाँ

ऋण स्वीकृत करने से पहले अपर्याप्त ऋण मूल्यांकन और ऋण नीति व निर्धारित सरकारी दिशानिर्देशों से विचलन के परिणामस्वरूप कम ब्याज दर निर्धारित की गई, जिसके परिणामस्वरूप ₹5.95 करोड़ का राजस्व घाटा हुआ और साथ ही अयोग्य उधारकर्ताओं को ₹47.65 करोड़ के ऋण स्वीकृत किए गए। पूर्व-वितरण शर्तों का पालन न करने या उनमें ढील देने के परिणामस्वरूप ऋण किश्तों का समय से पहले/अनुचित रूप से निर्गम हुआ। निदेशों का पालन न करने, ऋणदाता इकाइयों को अनुचित लाभ पहुँचाने और समय पर सुधारात्मक कार्रवाई न करने के कारण केएसआईडीसी द्वारा वसूली प्रयासों में देरी हुई।

कंपनी द्वारा बकाया राशि की वसूली के लिए समय पर उपचारात्मक कार्रवाई (संभावित कानूनी उपायों सहित) न करने के परिणामस्वरूप एक उधारकर्ता से ₹28.64 करोड़ का नुकसान हुआ। एक अलग मामले में, कंपनी ने न तो कोई वसूली उपाय शुरू किया और न ही संवर्धकों की व्यक्तिगत गारंटी का इस्तेमाल किया, बल्कि एक कंपनी को और समय विस्तार दे दिया, जिससे निर्धारित समय सीमा के भीतर ओटीएस राशि का 20 प्रतिशत जमा करने के उच्च न्यायालय के निर्देश का उल्लंघन हुआ था।

जीएसटी के विलंबित भुगतान के कारण परिहार्य व्यय

ट्रावनकोर सिमेंट्स लिमिटेड द्वारा जीएसटी के विलंबित भुगतान और जीएसटी रिटर्न दाखिल करने में देरी के परिणामस्वरूप ब्याज और विलंब शुल्क के रूप में ₹1.59 करोड़ का परिहार्य व्यय हुआ।

सफेद क्लिंकर के प्रापण पर परिहार्य अतिरिक्त व्यय

ट्रावनकोर सिमेंट्स लिमिटेड के निदेशक मंडल के गठन में सरकार की ओर से हुई देरी के परिणामस्वरूप ₹0.45 करोड़ के अतिरिक्त व्यय के साथ उच्च दरों पर सफेद क्लिंकर का प्रापण किया गया।

केंद्र सरकार के सहायता अनुदान से ब्याज के तौर पर अर्जित अनुचित लाभ

हैन्डीक्रैफ्ट डेवलेपमेंट कारपरेशन ऑफ केरला लिमिटेड ने सामान्य वित्तीय नियम, 2017 के प्रावधानों का उल्लंघन किया क्योंकि वह केंद्र सरकार के सहायता अनुदान निवेश से अर्जित ₹1.16 करोड़ के ब्याज को भारत की समेकित निधि में जमा करने में विफल रहा।

जीएसटी का परिहार्य भुगतान

केरला स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट कारपरेशन द्वारा एक निजी पार्टी के साथ संविदा के निष्पादन में जीएसटी के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत छूट प्राप्त करने में विफलता के परिणामस्वरूप ₹1.55 करोड़ के जीएसटी का परिहार्य भुगतान हुआ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी ई- पत्रिका "अमृतवाणी" का तृतीय अंक प्राप्त हुआ । सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यर्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है । निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

क्र.सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री राकेश गोदारा	पहले कहीं मिल चुके है
2.	श्री अनुराग शुक्ला	तन्हाई
3.	सूश्री मैथिली जे.आर.	स्वयं में खुश
4.	सूश्रीए.एन.देविका	किताबों की दुनिया
5.	श्रीमती उषा बर्टी	सरल जीवन ही सफल है, एक अनोखा ख्वाब

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय),
मुंबई,

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "अमृतवाणी" का तृतीय अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है तथा इसकी आंतरिक साज-सज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। श्रीमती उषा बर्टी की "सरल जीवन ही सफल है", श्री राकेश गोदारा की "झील आँखे", श्री अनुराग शुक्ला की "बेस्ट फ्रेंड", सुश्री मैथिली जे आर "स्वयं में खुश" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सारांशत: राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में इस पत्रिका ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। पत्रिका भविष्य में भी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो, ऐसी कामना है।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान) का
कार्यालय, पश्चिम बंगाल, कोलकाता

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" की एक ई-प्रति दिनांक 25.04.2025 को प्राप्त हुई । पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय है । पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है एवं कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। आँचल रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई। आशा है कि पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
हस्ता/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा
(केन्द्रीय), चंडीगढ़,

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के तृतीय अंक (ई-प्रति) की

प्राप्ति हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। अन्य कार्यालयीन गतिविधियों के छाया चित्रों का समावेश पत्रिका को और अधिक आकर्षक बना रहे हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं भी पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हस्ता/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का
कार्यालय, हैदराबाद, शाखा: भुवनेश्वर

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व
हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक की ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार । भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक पत्रिका "अमृतवाणी के तृतीय अंक के प्रकाशन हेतु बधाई एवं शुभकामनाएँ। पत्रिका में प्रकाशित सभी सामग्री प्रशंसनीय और प्रभावशाली है। सुश्री शेबा पी एच, उप महालेखाकार के द्वारा रचित यात्रा वृतांत "केरल-एक अनोखा अनुभव" केरल की प्राकृतिक सुंदरता तथा वन्यजीवों को देखने का अविस्मरणीय अनुभव काफी प्रफ्फुल्लित करने वाला है। श्रीमती उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के द्वारा रचित कविता "सरल जीवन ही सफल है" जीवन की वास्तविकता को उजागर करते हुए जीवन जीने की कला सिखाती है। श्री गोपेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित लेख "भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक: लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तम्भ"

काफी ज्ञानवर्धक है। सुश्री जे आर मालविका सुपुत्री राखी पी ओ, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित लेख "कार्य जीवन संतुलन" नौकरी तथा जीवन की अन्य जिम्मेदारियों को संतुलन के साथ निभाने की सीख प्रदान करती है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख तथा कविताएँ उत्प्रेरक तथा प्रशंसनीय है । हिंदी पखवाडा समारोह-2024 तथा गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियाँ तथा फोटो गैलरी काफी आकर्षक है। पत्रिका भविष्य में भी राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना योगदान देती रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं सम्पादकीय मण्डल को पुन: बधाई एवं आभार।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
बिहार, पटना

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के तृतीय अंक का ई- संस्करण प्राप्त हुआ। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एवं मुद्रण बहुत ही सुंदर है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, विशेषकर सुश्री ए.एन. देविका की "किताबों की दुनिया" एवं श्री अनुराग शुक्ला की "बेस्ट फ्रेंड" इत्यादि।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का
कार्यालय, झारखंड, राँची

महोदया/महोदय,

उपर्युक्त विषयक सूच्य है कि आपके कार्यालय की राजभाषा हिन्दी पत्रिका "अमृतवाणी" के अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई। राजभाषा हिन्दी की प्रगति हेतु आपका यह योगदान सराहनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, साज सज्जा मनमोहक है । यूं तो पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय हैं परंतु निम्नलिखित रचनाएँ विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती हैं-

क्र.सं.	रचना का नाम	रचयिता
1.	तन्हाई	श्री अनुराग शुक्ला, स.लेप. अधिकारी
2.	एक अनोखा ख्वाब	श्रीमती उषा बर्टी, व.लेप. अ.
3.	स्वयं में खुश	सूश्री मैथिली जे आर
4.	कार्य जीवन संतुलन	सूश्री मालविका जे आर

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) –
प्रथम, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "अमृतवाणी" के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री अनुराग शुक्ला का लेख 'बेस्ट फ्रेंड', सुश्री शेबा पी. एच. का लेख 'केरल-एक अनोखा अनुभव', श्रीमती उषा बर्टी की कविता 'सरल जीवन ही सफल है', सुश्री ए. एन. देविका की कविता 'किताबों की दुनिया' प्रशंसनीय हैं कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
कर्नाटक, बेंगलूरु

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'अमृतवाणी' के तीसरे अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में संगृहीत सभी रचनाएँ प्रभावशाली रोचक एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित श्री अनुराग शुक्का का लेख 'बेस्ट फ्रेंड'; सुश्री ए एन देविका की कविता 'किताबों की दुनिया' और श्रीमती उषा बर्टी की कहानी 'एक अनोखा ख्वाब' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक एवं संपादक मरुलेखा
वातायन, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक), राजस्थान, जयपुर

महोदया,

आपके कार्यालय की अर्ध वार्षिक पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय ई-अंक की प्राप्ति हुई है। सादर धन्यवाद। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु यह एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ जैसे श्रीमती उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा रचित कविता 'सरल जीवन ही सफल है, सुश्री शेबा पी.एच., उप महालेखाकार द्वारा रचित लेख 'केरल-एक अनोखा अनुभव' एवं श्री गोपेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षक का लेख 'भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक: लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तंभ' जैसे लेख अत्यंत प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा व मुद्रण भी अति उत्तम है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ। आशा है कि इस प्रकार का प्रयास निरंतर जारी रहेगा। यह पत्र सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय पर दिनांक 24.04.2025, अपराह्न 12:36 बजे ई-मेल के माध्यम आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका - 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं सराहनीय है। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

आपके हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

मेघालय, शिलांग

महोदया,

आपके कार्यालय की अर्ध वार्षिक पत्रिका 'अमृतवाणी' के तीसरे अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर सुश्री शेबा पी एच, उप महालेखाकार का

लेख "केरल- एक अनोखा अनुभव", श्री अनुराग शुक्ला की कविता "तन्हाई", सुश्री ए एन देविका की कविता "किताबों की दुनिया", सुश्री जे आर मैथिली का लेख "स्वयं में खुश", श्रीमती सुशीला पी वी का लेख 'प्राकृतिक संसाधन और सतत भविष्य" एवं श्रीमती उषा बर्टी की कविता सरल जीवन ही सफल है' आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका 'अमृतवाणी' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का
कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई है । एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक हैं । पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं, जिसके लिए सभी रचनाकारों को साधुवाद । श्री अनुराग शुक्ला द्वारा रचित कविता 'तन्हाई', श्रीमती उषा बर्टी द्वारा लिखित कहानी 'एक अनोखा ख्वाब', सुश्री शेबा पी एच द्वारा लिखित लेख 'केरल-एक अनोखा अनुभव' एवं श्री अतुल कृष्ण डी द्वारा लिखित यात्रा वृतांत 'गोवा तक हमारे सपनों का सफर' सराहनीय हैं।

आशा करता हूं कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का
कार्यालय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के तृतीय अंक की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई । पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वत: ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय हैं अपितु सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती हैं। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है । पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (ले व ह), पटना,
बिहार

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "अमृतवाणी" पत्रिका के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका प्रेषण हेतु धन्यवाद । इस पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर श्रीमती बिन्दु के एन की "स्वासिका... तुम्हारी यादों में, श्रीमती उषा बर्टी की "सरल जीवन ही सफल है" एवं श्री गोपेश कुमार की "भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक: लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तम्भ आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं । पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई । पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का कलेवर आकर्षक है । पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर 'तन्हाई, 'मार्कस ऑरेलियस के द मेडिटेशन', 'बेस्ट फ्रेंड', 'भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक: लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तंभ', एवं 'प्राकृतिक संसाधन और सतत भविष्य' विशेष रूप से पठनीय, रोचक एवं सराहनीय हैं । सभी रचनाकारों की प्रशंसनीय है। इस हेतु सभी रचनाकार बधाई के पात्र है।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (सलाहकार)
क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
प्रयागराज

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "अमृतवाणी" के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है, विशेष तौर पर 'तन्हाई, पहले कहीं मिल चुके है, झील आँखें, बेस्ट फ्रेंड, प्राकृतिक संसाधन और सतत भविष्य आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है । पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
भोपाल

महोदय,

सं.लेप.-II/हिंदी कक्ष/ई-गृह पत्रिका-अमृतवाणी/ 2025-26 दिनांक 17.04.2025 द्वारा

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की है। 'एक अनोखा ख्वाब', 'केरल-एक अनोखा अनुभव', 'भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक: लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तंभ', 'स्वयं में खुश', 'कार्य जीवन संतुलन' एवं 'आडिट दिवस, 2024' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं । उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा, चंडीगढ़

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'अमृतवाणी' के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उदेश्यपूर्ण है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

पत्रिका में श्रीमती उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'सरल जीवन ही सफल है', श्री अनुराग शुक्ला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'तन्हाई', तथा श्री मैथिली जे आर की रचना 'स्वयं में खुश' विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़

महोदय,

आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 24.04.2025 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के तृतीय अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री गणेश कुमार का "भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक: लोकतंत्र का अभिन्न स्तंभ", सुश्री जे. आर. मालविका का "कार्य जीवन संतुलन" एवं श्रीमती सुशीला पी. वी. का "प्राकृतिक संसाधन और सतत भविष्य" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री अनुराग शुक्ला की "तन्हाई" एवं सुश्री ए. एन. देविका की "किताबों की दुनिया" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका अमृतवाणी के तृतीय अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्रीमती उषा बर्टी की कविता "सरल जीवन ही सफल है", श्री अनुराग शुक्ला की कविता "तनहाई", सुश्री एन. देविका की कविता "किताबों की दुनिया", श्री राकेश गोदरा की कविता "पहले कहीं मिल चुके हैं" आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा – वाणिज्यक का कार्यालय, बेंगलुरु

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के द्वितीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्र. नाम रचनाएँ

1.सुश्री शेबा पी एच, उप महालेखाकार केरल – एक अनोखा अनुभव
2.श्री गोपेश कुमार, स.ले.प.अ.भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक: लोकतंत्र का एक अभिन्न स्तंभ
3.श्रीमती बिंदु के.एन., पर्यवेक्षक स्वासिका–तुम्हारी यादों में
4.सूश्री जे.आर. मालविका, सुपुत्री-श्रीमती राखी पी.ओ., स.ले.प.अ. कार्य जीवन संतुलन

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(वरिष्ठ उप महालेखाकार / प्रशासन के अनुमोदन दिनांकित 28/04/2025 से जारी)

भवदीया,
हस्ता/-
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
महाराष्ट्र, नागपूर

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "अमृतवाणी" के तृतीय अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की एवं सराहनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित श्रीमती उषा बर्टी की कविता 'सरल जीवन ही सफल है, सुश्री जे आर मैथिली की रचना 'स्वयं में खुश', श्रीमती सुशीला पी वी की रचना 'प्राकृतिक संसाधन और सतत भविष्य एवं सुश्री मालविका जे. आर. की रचना 'कार्य जीवन संतुलन' विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
उप निदेशक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे,
गोरखपुर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम व शाखा कार्यालय, तृशूर